हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज

का

पिछले ५० वर्षों का

परिचयात्मक विवरण

(वि० १९५७—२००७ ; ई० १९००—५०)

[ना० प्र० पत्रिका वर्ष ५७ अंक १ (सं० २००९) से पुनर्मुद्रित]

नागरीप्रचारिणी सभा
काशी

प्रकाशक : नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

मुद्रक : महताब राय, नागरी मुद्रण, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

संवत् २००६ मूल्य [illegible]

हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज

पिछले पचास वर्षों का

परिचयात्मक विवरण

(वि० १९५७-२००७; ई० १९००-१९५०)

प्रस्तावना

हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का कार्य नागरीप्रचारिणी सभा के प्रयत्न और उत्तरप्रदेशीय शासन की सहायता से पचास वर्ष पहले आरंभ किया गया था। इन पचास वर्षों के कार्य का संक्षिप्त परिचय मेरी प्रेरणा से खोज-कार्य के वर्तमान अन्वेषक श्री दौलतराम जुयाल ने लिखा है जो पत्रिका में प्रकाशित किया जा रहा है। इसके लिये हम श्री जुयाल के अनुगृहीत हैं।

हिंदी ग्रंथों की खोज के कार्य से संबंधित निम्नलिखित समस्याओं की ओर इस समय विशेष ध्यान दिलाना आवश्यक है—

(१) खोज के जो पिछले त्रैवार्षिक वृत्त अनछपे पड़े हैं उन्हें शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित किया जाय। इसके लिये एक योजना उत्तरप्रदेशीय शिक्षामंत्री महोदय के समक्ष मैंने रक्खी थी, जिसे उन्होंने मौखिक रूप में स्वीकार भी कर लिया था। वह यह है कि बिना छपे वृत्तों का एक सार-ग्रंथ लगभग एक सहस्र पृष्ठों में तैयार करा लिया जाय और उसे सरकार की सहायता से प्रकाशित करा दिया जाय। इसके अनंतर फिर नई रिपोर्टें यथाक्रम छपती रहेंगी। सभा ने यह योजना सरकार के पास भेजी है। आशा है इसे शीघ्र कार्यान्वित किया जा सकेगा।

(२) सभा के कार्यालय में खोज-विभाग की सामग्री अलग कमरे में व्यवस्थित कर दी गई है। ग्रंथों के विवरणपत्र वार्षिक क्रम से वहाँ सुरक्षित हैं और हिंदी के विद्वान् सभा की विशेष आज्ञा से उनका उपयोग कर सकते हैं। हिंदी के इतिहास-ग्रंथों को सर्वथा परिशुद्ध बनाने के लिये अधिकाधिक विद्वानों को इस सामग्री से लाभ उठाना चाहिए।

(३) अन्वेषकों द्वारा जो हस्तलिखित ग्रंथ सभा के लिये दान में या मूल्य से प्राप्त कर लिए जाते हैं वे सभा के पुस्तकालय में सम्मिलित होते रहते हैं। किंतु अनेक ग्रंथ जिनमें प्रायः महत्त्वपूर्ण भी होते हैं, जहाँ के तहाँ रह जाते हैं और एक तरह से वे साहित्यिक जगत् के लिये नष्टप्राय ही हो जाते हैं। आजकल के वैज्ञानिक युग में इसका उपाय सरल है। इसके लिये सभा के आर्यभाषा पुस्तकालय में एक फोटोस्टाट यंत्र की स्थापना होनी चाहिए। उसके द्वारा लगभग चार आने प्रति पृष्ठ के हिसाब से किसी भी ग्रंथ की प्रतिलिपि अविलंब की जा सकती है और तदनंतर मूल ग्रंथ उसके स्वामी को लौटा दिया जा सकता है। इस यंत्र की सहायता से हिंदी के विद्वान्, विश्वविद्यालय और साहित्यिक शोध करनेवाले छात्र भी सुविधा से प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ प्राप्त कर सकेंगे। इस योजना को भी सभा प्रांतीय शासन के समक्ष प्रस्तुत कर रही है।

(४) प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ गाँव-गाँव बिखरे पड़े हैं। सभा की सीमित शक्ति सब जगह खोज-कार्य का उत्तरदायित्व उठा सके यह असंभव है। सभा समस्त हिंदी-प्रेमियों के सहयोग को इस कार्य की सफलता के लिये आवश्यक समझती है। प्रत्येक हिंदी-प्रेमी का कर्तव्य है कि वह हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों को सभा के खोज-कार्यालय में भेजकर नष्ट होने से बचाए। भविष्य में हिंदी भाषा के जिस इतिहास पर हिंदी के विद्वान् काम करेंगे उसके लिये एक एक ग्रंथ अनमोल कड़ी सिद्ध होगा। अभी तक जो ग्रंथ मिले हैं उन्हें रुपए में एक आने भर समझना चाहिए। हिंदी की अपरिमित ग्रंथ-राशि अभी बिखरी पड़ी है। पिछले कुछ वर्षों में अपभ्रंश और पुरानी हिंदी के ग्रंथों का विशेष परिचय मिला है। विशेषकर जैन-मंदिरों के पुस्तक-भंडारों में बहुत-सा नया साहित्य प्रकाश में आ रहा है। इसी प्रकार हिंदी की ज्ञानमार्गी और निर्गुणी शाखा का भी पर्याप्त साहित्य मिल रहा है जिसपर शोध होने की आवश्यकता है। अभी हाल में कोटा, किशनगढ़, दतिया आदि रजवाड़ों के पुस्तकालयों में सुरक्षित हिंदी साहित्य को देखने का सुयोग मुझे मिला था। यह साहित्य भी हिंदी विद्वानों के सामने पूरी तरह नहीं आया है। वैष्णवों का 'वार्ता' साहित्य और 'पद' साहित्य भी अभी अधिकांश अप्रकाशित है और खोज-कार्य के लिये अच्छा क्षेत्र प्रस्तुत करता है। हिंदी के मुसलमानी कवियों की अत्यधिक सामग्री अभी तक सामने नहीं आई। अकेले जान कवि की ७० से अधिक रचनाओं का पता खोज में लगा है। जान-ग्रंथावली के रूप में उसका प्रकाशन होना आवश्यक है। खोज-सामग्री

के साथ पैर मिलाकर चलने के लिये प्रकाशकों को भी सजग होने की आवश्यकता है।

(५) अभी तक खोज का काम हिंदी-क्षेत्र के एक छोटे से भाग अर्थात् उत्तर-प्रदेश के कुछ जिलों तक ही सीमित रहा है। किंतु समस्त हिंदी-क्षेत्र के ये सात भाग किए जा सकते हैं—(१) उत्तरप्रदेश, (२) बिहार, (३) विंध्य प्रदेश, (४) मध्य प्रदेश, (५) हैदराबाद, (६) राजस्थान, (७) पंजाब। इस समय इन सातों प्रदेशों में अपने-अपने शासन हैं। उन सबको हिंदी ग्रंथों के प्रति अपने-अपने कर्तव्य का निर्वाह करना आवश्यक है। एक-एक प्रदेश यूरुप के फ्रांस-जर्मनी सदृश देशों के समान बृहत् हैं जहाँ हिंदी का साहित्य शतियों तक वृद्धि पाता रहा है। यदि स्थानीय शासन और साहित्य-सेवी समय रहते अपने क्षेत्र की सुध न लेंगे तो वहाँ की ग्रंथ-राशि को नष्ट ही मान लेना पड़ेगा। हैदराबाद का मुझे पता लगा है कि वहाँ लगभग पंद्रहवीं शती से हिंदी में साहित्य-सृजन का अटूट तार मिलता है। पर वहाँ के सब ग्रंथ फारसी लिपि में लिखे मिलते हैं। हिंदीवालों ने अभीतक उनकी कोई सुध नहीं ली। मुसलमानों के द्वारा इस दिशा में कुछ कार्य अवश्य हुआ पर वह पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। हैदराबाद के पुस्तकालय 'इदाराए अदबियात उर्दू' में पुरानी हिंदी, पुरानी पंजाबी और पुरानी सिंधी के बहुमूल्य ग्रंथ सुरक्षित है। वहाँ के डा० मोहीउद्दीन कादरी उदार विचारों के विद्वान् हैं जो इस कार्य में रुचि रखते हैं। 'नौसर बहार' नामक हिंदी की प्रेम-कथा का १५०६ ई० का हस्तलेख उक्त पुस्तकालय में है। हैदराबाद के हिंदी-साहित्य-सम्मेलन को स्थानीय शासन की आर्थिक सहायता और उर्दू के विद्वानों के सहानुभूतिपूर्ण सहयोग से अविलंब इस कार्य को हाथ में लेना चाहिए। राजस्थान में उदयपुर के हिंदी विद्यापीठ ने हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का प्रशंसनीय कार्य अपने बलबूते पर किया है। अभी हाल में जयपुर के श्री महावीर अतिशय क्षेत्र के उत्साही कार्यकर्ताओं ने आमेर के जैन-भंडारों की सूची और ग्रंथों के प्रशस्ति-परिचय पर दो ग्रंथ प्रकाशित किए हैं। लेकिन राजस्थान-सरकार को अत्यंत शीघ्र इस कार्य को सुव्यवस्थित ढंग से हाथ में लेना चाहिए। वहाँ के साहित्यिकों का कर्तव्य है कि वर्तमान मंत्रिमंडल का ध्यान इस महत्त्वपूर्ण कार्य की ओर आकृष्ट करें। जो ग्रंथ आज हैं वे कल नहीं होंगे; जो आज आ सकते हैं, कल उनके लिये पछताना पड़ेगा। इस समय पुराने हस्तलिखित ग्रंथों की राशि बुरी तरह नष्ट हो रही है। संस्कृत के ग्रंथों का धनी-धोरी तो मानो कोई है ही नहीं। नागरीप्रचारिणी सभा

का भी कर्तव्य है कि वह इन सब प्रादेशिक शासनों का और अपने से संबद्ध स्थानीय साहित्यिक संस्थाओं का ध्यान इस विषय की ओर आकर्षित करे। ऊपर जिन सात प्रांतों के नाम लिखे हैं उनकी साहित्य-सभाएँ यदि एकत्र एक सम्मेलन करके इस महत्त्वपूर्ण कार्य की योजना बनाएँ तो और भी अच्छा रहेगा और वे सभा के गत पचास वर्षों के अनुभवों से लाभ भी उठा सकेंगी।

वासुदेवशरण अग्रवाल
अध्यक्ष, खोज-विभाग,
नागरीप्रचारिणी सभा

विवरण

संवत् १९२५ (सन् १८६८ ई०) में तत्कालीन भारत-सरकार ने लाहौर के पं० राधाकृष्ण के प्रस्ताव को स्वीकार कर हस्तलिखित संस्कृत ग्रंथों की खोज का कार्य आरंभ किया था जो बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी, बंबई और मद्रास के प्रांतीय शासनों तथा अन्य संस्थाओं और विद्वानों द्वारा अब तक होता आ रहा है। इस खोज के फलस्वरूप संस्कृत साहित्य की जिस विस्तृत और महत्त्वपूर्ण सामग्री का पता चला है उसने संसार के ज्ञानपिपासुओं तथा साहित्य और इतिहास के मर्मज्ञों को पूरी तरह प्रभावित कर भारतीय विद्याओं की उपादेयता और गंभीरता का परिचय दिया है।

काशी-नागरीप्रचारिणी सभा के संचालकों का भी ध्यान सभा की स्थापना (संवत् १९५० वि०, सन् १८९३ ई०) के अवसर पर ही इस महत्त्वपूर्ण कार्य की ओर आकर्षित हुआ था। उन्हें इस बात का विश्वास था कि हिंदी की भी प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों में साहित्य के अतिरिक्त अनेक ऐतिहासिक और सामाजिक तथ्य छिपे पड़े हैं। परंतु इन ग्रंथों को ढूंढ़ निकालना सरल कार्य न था; क्योंकि सभ्यता के इस युग में भी ऐसे बहुत से लोग हैं जो अपने प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों को देना तो दूर रहा, दिखाने में भी आनाकानी करते हैं। तथापि यह सोचकर कि कदाचित नीति, धैर्य और परिश्रम से काम करने पर कुछ लाभ अवश्य होगा, सभा ने सरकार के संरक्षण, अधिकार और देखरेख में इन ग्रंथों की खोज करने का निश्चय किया। परंतु सभा उस समय प्रारंभिक अवस्था में थी और ऐसे महत्त्वपूर्ण एवं व्ययसाध्य कार्य का भार उठाने में सर्वथा असमर्थ थी। अतएव

उसने भारत-सरकार और बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी से संस्कृत की हस्तलिखित पुस्तकों की खोज और जाँच करते समय हिंदी की हस्तलिखित पुस्तकों की भी जाँच करने और सूची प्रकाशित करने की प्रार्थना की। सभा की यह प्रार्थना स्वीकृत हुई और एशियाटिक सोसाइटी ने जब सन् १८६५ में बनारस में खोज का कार्य आरंभ किया तो हिंदी की भी ६०० पुस्तकों की नोटिसें तैयार कीं। किंतु दूसरे वर्ष उक्त सोसाइटी ने इस काम को करने में अपनी असमर्थता प्रकट की और वहीं यह कार्य समाप्त हो गया। खेद है कि उक्त ६०० पुस्तकों की कोई सूची प्रकाशित नहीं की गई। सभा ने उत्तरप्रदेश (तब संयुक्त प्रदेश) की तत्कालीन सरकार से भी खोज का काम कराने की प्रार्थना की थी जिसने अपने शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर महोदय को संस्कृत पुस्तकों की खोज के साथ ही साथ उसी ढंग पर ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्त्व की हिंदी की हस्तलिखित पुस्तकों की खोज का भी उचित प्रबंध कर देने के लिये लिखा। सरकार की उक्त आज्ञा की अवहेलना की गई और उसके अनुसार कुछ भी कार्य नहीं हुआ। यह स्थिति देखकर मार्च सन् १८९९ में सभा ने प्रांतीय सरकार का ध्यान फिर इस ओर आकर्षित किया। अब की बार सरकार ने इस कार्य के लिये सभा को ४००) रु० की वार्षिक सहायता देना और खोज की रिपोर्टों को अपने व्यय से प्रकाशित करना स्वीकार किया। इससे उत्साहित होकर सभा ने संवत् १९५७ (सन् १९०० ई०) में अपने प्रधान स्तंभ बाबू श्यामसुंदरदास जी के निरीक्षण में खोज-विभाग की स्थापना की और तब से वह लगातार यह कार्य करती आ रही है।

इस कार्य की अब तक उन्नीस रिपोर्टें तैयार की गईं जिनमें से प्रथम छः (सन् १९००–०५ ई०) वार्षिक क्रम से हैं और शेष तेरह (सन् १९०६–४६ ई०) प्रांतीय सरकार की सन् १९०७ की आज्ञा के अनुसार त्रैवार्षिक क्रम से लिखी गई हैं। बीसवीं रिपोर्ट (सन् १९४७–४९ ई०) लिखी जा रही है। प्रथम बारह रिपोर्टें (छः वार्षिक और छः त्रैवार्षिक) छप चुकी हैं और तेरहवीं (सन् १९२६–२८ ई०) प्रांतीय सरकार के पास विचारार्थ एवं प्रकाशनार्थ पड़ी हुई है। अन्य रिपोर्टों को छापने के लिये भी सरकार से लिखापढ़ी चल रही है।

यह बड़े खेद की बात है कि रिपोर्टों को छापने में सरकार की ओर से बहुत विलंब हो रहा है। यह विलंब अंग्रेजी शासनकाल में ही होने लगा था। तत्कालीन सरकार ने यद्यपि अपनी ४००) रु० की वार्षिक सहायता को सन् १९०२ में ५००) रु०

और सन् १६१६ में १०००) रु० के क्रम से बढ़ाकर सन् १६२२ में २०००) रु० कर दिया था, पर बीच-बीच में और विशेषतया अपने अंतिम दिनों में उसने इस सहायता को देने और रिपोर्टों को छापने में अत्यंत संकोच और अनुदारता से कार्य किया। सन् १६१३ में उसने सहायता बंद कर दी थी, जो सन् १६१५ में घोर प्रयत्न करने पर चालू हुई। इसी प्रकार उसने सन् १६२३–२५ की रिपोर्ट छापने के पश्चात् आगे की रिपोर्टों को छापना बंद कर दिया और छापने के लिये दी गई सन् १६२६–२८ की रिपोर्ट को अत्यंत नष्ट-भ्रष्ट दशा में वापस कर दिया। फलतः सभा को इस रिपोर्ट के नष्ट हुए अंश को फिर से तैयार करने में हानि उठानी पड़ी। इधर देश के स्वतंत्र हो जाने पर हमें अपने प्रांतीय शासन से पूरी आशा थी कि वह ठोस सहायता प्रदान कर खोज की समस्त कठिनाइयाँ दूर कर देगा, परंतु हमारी यह आशा अभी तक फलीभूत न हो सकी। हमने प्रांतीय शासन से आर्थिक सहायता में समुचित वृद्धि करने और अप्रकाशित रिपोर्टों को प्रकाशित करने के लिये प्रार्थना की। उसने आर्थिक सहायता के विषय में तो कुछ उत्तर नहीं दिया, पर रिपोर्टों को पुनः छापना स्वीकार किया। तदनुसार सन् १६२६–२८ ई० की रिपोर्ट का हिंदी रूपांतर करके उसे संवत् २००५ (सन् १६४८ ई०) में उसके पास भेज दिया गया। खेद है, तीन वर्ष बीत जाने पर भी यह अभी तक नहीं छप सकी। यह भी नहीं कहा जा सकता कि यह कब तक छपकर तैयार होगी। फिर भी सभा इस संबंध में सरकार से लगातार पत्र-व्यवहार कर रही है।

खोज की जितनी रिपोर्टें छपी हैं उनकी देश और विदेशों में सर्वत्र प्रशंसा हुई है। विदेशी विद्वानों में से जिन्होंने इनकी प्रशंसा की, ग्रियर्सन, हार्नली, पिशल और बार्थ उल्लेखनीय हैं।

खोज का मुख्य कार्य अन्वेषकों द्वारा होता है जो नगरों, उपनगरों और ग्रामों में घूम-घूमकर ग्रंथों का पता लगाते और उनका विवरण लेते हैं तथा महत्त्व-पूर्ण ग्रंथों को सभा के लिये प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। इसके अतिरिक्त इस कार्य की रिपोर्ट तैयार करने में वे निरीक्षक की सहायता करते हैं।

विवरण में ग्रंथ का नाम, रचयिता का नाम और निवासस्थान, ग्रंथ किस चीज पर लिखा है, पृष्ठ-संख्या, लंबाई-चौड़ाई (इंचों में), प्रति पृष्ठ में कितनी पंक्तियाँ हैं, ग्रंथ छप गया है या नहीं, यदि छप गया तो कहाँ, ग्रंथ का विस्तार (श्लोक-संख्या अनुष्टुप छंदों में), ग्रंथ पूर्ण है या अपूर्ण, रूप कैसा है, गद्य में

है कि पद्य में, किन अक्षरों में है, रचनाकाल, लिपिकाल, कहाँ वर्तमान है (ग्रंथ-स्वामी का पूरा पता), आरंभ का अंश, मध्य का अंश, अंत का अंश, विषय (पूर्ण विवरण सहित, प्रारंभ से अंत तक) और विशेष ज्ञातव्य (रचनाकाल, लिपिकाल, रचयिता का वृत्त, कोई ऐतिहासिक या सांस्कृतिक विवरण, ग्रंथ का महत्त्व और उससे संबंधित अन्य उल्लेख) आदि बातें रहती हैं।

विवरणों के आधार पर ही निरीक्षक के तत्त्वावधान में रिपोर्ट तैयार की जाती है जिसमें पहले एक विस्तृत भूमिका और पश्चात् तीन परिशिष्ट (मुख्यतः) रहते हैं तथा अंत में ग्रंथकारों और ग्रंथों की नामानुक्रमणिकाएँ दी जाती हैं। भूमिका में उन जिलों के नाम जहाँ खोज हुई, कार्य का परिमाण, प्राप्त ग्रंथों और रचयिताओं में कितने ग्रंथ और रचयिता नए हैं तथा कितने ग्रंथ ऐसे हैं जिनके रचयिता अज्ञात हैं, ग्रंथों और रचयिताओं का शताब्दि-क्रम से विभाग, ग्रंथों का विषय-विभाजन और महत्त्वपूर्ण ग्रंथों और उनके रचयिताओं के विषय में विस्तार से आलोचनात्मक विचार और निष्कर्ष आदि का उल्लेख किया जाता है। प्रथम परिशिष्ट में समस्त ग्रंथकारों और उनके ग्रंथों पर टिप्पणियाँ रहती हैं। द्वितीय परिशिष्ट में प्रथम परिशिष्ट में आए रचयिताओं के ग्रंथों के विवरण (जिन्हें अन्वेषक लिखते हैं) रहते हैं। तृतीय परिशिष्ट में उन महत्त्वपूर्ण ग्रंथों के विवरण रहते हैं, जिनके रचयिताओं के नाम ज्ञात नहीं होते।

रिपोर्ट में केवल संवत् १९३७ वि० (सन् १८८० ई०) तक के ही रचे ग्रंथों के विवरण रहते हैं। यह बड़ी सावधानी से लिखी जाती है और उसमें सच्ची बात का उद्‌घाटन करने के लिये पूर्व रिपोर्ट या रिपोर्टों की कतिपय बातों का ब्यौरेवार तथा सप्रमाण खंडन-मंडन भी रहता है जो अत्यंत आवश्यक है।

यद्यपि आरंभ में ही खोज का कार्य बड़े उत्साह से चलने लगा था तथापि उस समय इसकी कोई नियमित प्रणाली गठित न हो सकी थी। समस्त हिंदी-भाषा-भाषी प्रांतों को ही एक तरह कार्यक्षेत्र मान लिया गया था और जहाँ शीघ्र कार्य चलाने में सुविधा मिल सकी वहाँ के पुस्तकालयों में और व्यक्तियों के यहाँ पुस्तकें खोजी गईं। इस प्रकार जोधपुर, जयपुर, काँगड़ा (पंजाब), छत्रपुर राज्य और बुंदेलखंड पोलिटिकल एजेंसी आदि स्थानों में भी खोज की गई। इसकी भी रिपोर्टें प्रतिवर्ष लिखी जाती थीं जिससे सोचने-विचारने और पुस्तकों की ठीक-ठीक जाँच करने के लिये समुचित अवसर नहीं मिल पाता था तथा उनमें कार्य का परिमाण भी उचित रूप से नहीं रहता था। इसके अतिरिक्त ग्रंथों में उल्लिखित संवतों के

विषय में कई भूलें भी हो जाती थीं। परंतु पीछे थोड़ा अनुभव हो जाने के पश्चात् और सरकार की अनुमति प्राप्त होने पर सन् १९०६ से इसको कुछ अधिक व्यवस्थित रूप दिया गया जिसके अनुसार संयुक्त-प्रदेश और बिहार प्रांतों में ही पहले कार्य करना निश्चित हुआ तथा अन्यत्र जाने के पूर्व संयुक्त-प्रदेश का कार्य समाप्त करना स्थिर किया गया। इसके अतिरिक्त सन् १९०६ ई० से रिपोर्टें त्रैवार्षिक क्रम से लिखे जाने लगीं और सरकार को सूचित करने के लिये प्रतिवर्ष एक संक्षिप्त रिपोर्ट उसके पास भेजने की व्यवस्था हुई। आगे चलकर सरकार ने इस कार्य की समस्त रिपोर्टें सर जार्ज ग्रियर्सन (Sir George Grierson) के पास भेजीं और उनपर उनकी सम्मति माँगी। उक्त महोदय ने रिपोर्टों की भूरि-भूरि प्रशंसा तो की ही, साथ ही कार्य को और उत्तम रूप में चलाने के लिये २२ सितंबर सन् १९१४ के अपने पत्र में कुछ निर्देश भी किए।

इन निर्देशों को ध्यान में रखते हुए खोज-कार्य की फिर से नवीन प्रणाली स्थिर करने के लिये सभा ने सन् १९२० में एक उपसमिति संघटित की। उसने जो जो बातें निश्चित कीं वे संक्षेप में इस प्रकार हैं—

१—संयुक्त प्रदेश (अब उत्तर प्रदेश) में हस्तलिखित हिंदी पुस्तकों की खोज इस क्रम से होनी चाहिए—

(क) मेरठ कमिश्नरी और अलीगढ़ जिला।

(ख) आगरा कमिश्नरी (अलीगढ़ जिला छोड़कर), इटावा जिला, फर्रुखाबाद जिला तथा भरतपुर और धौलपुर राज्य।

(ग) रुहेलखंड और कुमाऊँ कमिश्नरियाँ तथा रामपुर और टेहरी राज्य।

(घ) इलाहाबाद कमिश्नरी (इटावा और फर्रुखाबाद जिले छोड़कर)।

(ङ) बनारस कमिश्नरी तथा बनारस राज्य और रियासतें।

(च) गोरखपुर कमिश्नरी तथा नैपाल सीमा के आसपास के स्थान।

(छ) लखनऊ कमिश्नरी।

(ज) फैजाबाद कमिश्नरी।

उपर्युक्त विभागों में जहाँ से भी कार्य किया जाय वहाँ के गाँव-गाँव तक की पूरी-पूरी खोज कर लेने के पश्चात् ही दूसरे विभाग में काम किया जाय। जहाँ-जहाँ खोज हो चुकी है, वहाँ पुनः होनी चाहिए। अब तक जो नोटिसें हुई हैं, वे अधूरी हैं, उन्हें पूरे विस्तार के साथ लिखना चाहिए।

२—अन्य प्रांतों (मध्यभारत, मध्यदेश, राजपूताना, बिहार, सतलज के इस पार के पंजाब के जिले तथा वहाँ की पहाड़ी रियासतों) में भी खोज का काम होना चाहिए। इसके लिये उन प्रदेशों की सरकारों का ध्यान इस ओर दिलाना उचित है।

३—खोज के इस काम के लिये अवैतनिक निरीक्षक चुना जाना चाहिए। प्रत्येक निरीक्षक का कार्य-काल कम-से-कम छः वर्ष निर्दिष्ट होना आवश्यक है। उसके कर्तव्य और अधिकार ये होने चाहिएँ—

(क) कार्य की तत्त्वावधानता। (ख) कार्य को नियत सिद्धांतों तथा प्रणाली के अनुसार चलाना। (ग) अन्वेषक का नियत करना, उसे छुट्टी देना, निकालना, उसकी वेतन-वृद्धि करना आदि। अन्वेषक को निकालने पर वह सभा से पुनः विचार की प्रार्थना कर सकेगा और सभा के निश्चय को प्रधानता दी जायगी। (घ) बजट में स्वीकृत धन के अनुसार व्यय को स्वीकृत करना। (ङ) अन्वेषक का वेतन-भत्ता निश्चित करना।

अन्वेषक को निकालने पर वह सभा से पुनः विचार की प्रार्थना कर सकेगा और सभा के निश्चय को प्रधानता दी जायगी।

५—अन्वेषक इस योग्यता का हो कि वह हिंदी साहित्य का अच्छा ज्ञान रखता हो तथा प्राचीन खोज के काम में उसका मन लगता हो। उसका वेतन कम-से-कम ४५)–३)रु०–६०) रु० मासिक हो और उसका भत्ता उसके व्यय को समझ कर नियत किया जाय जिसमें उसे इस काम में अपने पास से कुछ न व्यय करना पड़े। वह नौ मास तक पुस्तकें खोजने का काम करे और तीन मास तक निरीक्षक के पास रहकर इस कार्य का विवरण आदि लिखने में उसकी सहायता करे।

६—सर जार्ज ग्रियर्सन ने अपने २२ सितंबर सन् १९१४ के पत्र में जो निर्देश किए हैं* उनके अनुसार प्रत्येक पुस्तक की नोटिस प्रस्तुत होनी चाहिए। केवल

---

* डा० ग्रियर्सन के पत्र का मुख्य अंश नीचे दिया जाता है—

I am unable to agree with those who consider that the Reports in their present form are valueless. On the contrary, I think that they have very considerable value as works of

ग्रंथों और ग्रंथकर्त्ताओं की नामावली न हो। पुस्तक के विषय को विस्तार के साथ लिखना चाहिए तथा ग्रंथकार के वंश और उसके अभिभावक (आश्रयदाता) के वर्णन को पूरा-पूरा उद्धृत करना चाहिए। साथ ही सन्-संवत् जहाँ-जहाँ हों उन्हें

---

reference, and I have often used them myself and derived assistance from them.

I consider, however, that they are capable of improvement as to their contents and would, in regard to this point suggest that the late Dr. Rajendra Lal Mitra's Notices of Sanskrit Mss. published by the Government of Bengal, could well be taken as a model. As it is, the Hindi Notices follow the form of this very closely, except in one most important particular. A description of a book is of little value to students unless (besides the information given in the report) pretty full information is given as to its contents. On this point the Hindi Notices altogether fail. Merely a few words are given under each head affording a superficial and general view of the subject. What is wanted is an ordered summary of the contents of each Ms. Of course this would not be necessary in the case of well-known works which have been frequently printed, but most of the works described in this report exist only in Mss. and such descriptions as "the sports of Radha and Krishna" (pp. 130, 131), "Laudation of Bhakti " (p. 155) or "the incarnations of Isvara, and Laudation of his name" (p. 155) are manifestly insufficient. These examples are typical of the whole report. On pp. 130, 131, three different works by the same author are described in exactly the same words (four in each case) but it stands to reason that their contents must have been different. As I have not seen them, I cannot tell what the account of each should contain, but it might be something of this kind vv. (or pp.) a–b such, vv. (or pp.) c–d such and such, vv. (or pp.) e–f such and such, and so on.

To make my meaning clear I may give an imaginary account of the contents of an imaginary work on Radha and Krishna; vv. (or pp.) 1–10 Invocation to Ganesa, praise of

लिख देना चाहिए। रिपोर्ट प्रति तीसरे वर्ष लिखी जानी चाहिए और वह बहुत महत्त्व की होनी चाहिए। जिन-जिन साहित्यिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक बातों का पता लगे उनका रिपोर्ट में पूर्ण विवेचन के साथ उल्लेख होना चाहिए और यह स्पष्ट दिखाना चाहिए कि किन पुराने विचारों वा सिद्धांतों का किन नई बातों से

Vishnu, account of the origin of the Krishna incarnation; vv. (or pp.) 11–15 author's account of himself and of his patron (giving any dates and names available); vv. (or pp.) 16–21 Krishna wandering in the forest; vv. (or pp.) 22–50 the meeting with Radha; vv. (or pp. 51–100) description of Radha's beauty; vv. (or pp.) 101–150 Krishna leaves Radha; her despair; vv, (or pp.) 151–200 arrival of Udhava with message from Krishna, and so on.

In a work dealing with the "Laudation of Bhakti" it ought to be possible to give an account of the general build of the work, and of the lines along which the laudation proceeds; and in an account of Isvara's incarnations and laudation of his name, we might at least be told what incarnations are described and what space out of the whole is devoted to the laudation. Again many books are merely described as Nakha-Sikhas, or catalogues of female charms. There are hundreds of these nakha-sikhas, some good and some bad, and all different. Merely to name the work as a nakha-sikha is not sufficient. We should be given some account of the principles on which the cataloguing is done. Even an anthology or a collection of sonnets by one auther, or the like, is based on some system and a list could be given of the various groups of poems. In the case of an anthology a list of the names of the authors whose poems are quoted, is all important. If we know the date of an anthology and that a certain author is quoted in it we have a terminus ad quem which may be most useful in fixing his date.

For Narrative works, especially those which are historical or semi-historical, such as the interesting Ms. mentioned as No. 60 on p. 23 the value of an abstract of the contents is self-evident.

(जिनका खोज से पता लगा है) समर्थन अथवा खंडन होता है, तथा कौन सी बातें संदिग्ध जान पड़ती हैं। सारांश यह कि प्रति तीसरे वर्ष की रिपोर्ट को एक दूसरे से संबद्ध होना चाहिए तथा खोज से जो प्रकाश साहित्यिक, ऐतिहासिक अथवा सामाजिक व्यवस्था या घटनाओं पर पड़ता हो उसका पूरा-पूरा तथा स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। डा० राजेंद्रलाल मित्र, डा० भांडारकर, पीटर्सन तथा पं० हरप्रसाद शास्त्री की रिपोर्टें, विशेषकर अंतिम महाशय की बौद्ध हस्तलिखित पुस्तकों पर रिपोर्ट आदर्श-स्वरूप सामने रखकर तब रिपोर्ट लिखी जानी चाहिए।

८—हस्तलिखित पुस्तकों के संग्रह, संरक्षण और प्रकाशन की उचित व्यवस्था की जाय।

९—हिंदी पुस्तकों की खोज का जितना काम अब तक हुआ है, उसका सारांश डा० आफ्रेक्ट के 'कैटेलोगस कैटोलोगरम' के ढंग पर तैयार करवा कर प्रकाशित करवा दिया जाय और कुछ नियत वर्षों के अनंतर इसके अगले भाग इसी प्रकार तैयार कराकर प्रकाशित होते रहें। यदि प्रति नवें वर्ष यह काम हो तो उत्तम होगा। प्रतिवर्ष सभा की पत्रिका तथा वार्षिक रिपोर्ट में खोज के काम का किंचित् विस्तारपूर्वक वर्णन रहा करे जिससे प्रतिवर्ष के काम की सूचना सब विद्वानों को मिलती रहे।

सभा ने इन सब सिद्धांतों को स्वीकृत किया और अब इन्हीं के अनुसार काम हो रहा है।

सभा के प्रयत्न करने पर दिल्ली और पंजाब की प्रांतीय सरकारों ने भी अपने-अपने प्रांतों में खोज-कार्य करने की अनुमति प्रदान की। इसके लिये दिल्ली की प्रांतीय सरकार ने ५००) रु० और पंजाब-सरकार ने तीन वर्ष तक ५००) रु० प्रतिवर्ष दिए। सभा ने इन प्रांतों में क्रमशः डा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल (सन् १९३१ ई०) और श्रीयुत जगद्धर शर्मा गुलेरी (सन् १९२२–२४ ई०) के निरीक्षण में कार्य करवाया जिसकी रिपोर्टें सभा से छप चुकी हैं। अन्य प्रांतों और राज्यों में भी इसी प्रकार प्रयत्न किए गए पर अभीतक कोई सफलता नहीं मिली।

खोज द्वारा हिंदी के जिन सैकड़ों ग्रंथों का पता चला उनसे हिंदी साहित्य का इतिहास प्रस्तुत करने में बड़ी सहायता मिली। पहले-पहल सन् १८८३ में ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने 'शिवसिंहसरोज' नाम का हिंदी का इतिहास प्रस्तुत किया था। पीछे सन् १८८९ में सर जार्ज ग्रियर्सन ने 'मॉडर्न वर्नाक्युलर लिट्रेचर ऑव

नॉर्दर्न हिंदुस्तान' नाम का इतिहास लिखा। उसके पश्चात् सन् १९१३ में 'मिश्रबंधुविनोद', सन् १९१८ और १९२० में क्रमशः श्री ग्रीव्स तथा श्री एफ० ई० के द्वारा लिखे गए हिंदी साहित्य के इतिहास विषयक ग्रंथों तथा सन् १९२९ में आचार्य शुक्ल कृत हिंदी-साहित्य के इतिहास में खोज की तब तक की सामग्री का पूरा-पूरा उपयोग किया गया। इन इतिहासों के लिखे जाने के पश्चात् खोज में अनेक तथ्य की बातें और प्रकट हुई हैं जिनके आधार पर इनमें भारी परिवर्तत करने की आवश्यकता है। इनमें प्रतिपादित बहुत सी बातें अब भ्रामक सिद्ध हुई हैं और बहुत सी ऐसी हैं जिन्हें इनमें सम्मिलित करना पड़ेगा। उदाहरणार्थ, वीरगाथा-काल की कोई प्राचीन रचना उपलब्ध न होने के कारण उसके अस्तित्व के संबंध में विद्वानों में मतभेद उपस्थित हो गया है, अतः उसपर फिर से विचार करने की आवश्यकता है। दूसरे इन इतिहासों में सिद्ध, नाथ, निर्गुणी और निरंजनियों के साहित्य का विस्तृत विवेचन होना चाहिए जिनके संबंध की विपुल सामग्री खोज में प्राप्त हुई है। अनेक जैन साहित्यिकों की भी रचनाएँ मिली हैं जिन्हें इनमें उचित स्थान मिलना चाहिए। सूफी प्रेमकथानकों की तरह ही भारतीय प्रेमकथानक काव्य भी मिले हैं जिनका सम्यक् रूप से अभी कोई विवेचन नहीं किया गया है, अतः उनका भी विवेचन होना चाहिए। इसी प्रकार अनेक कवियों के विषय में भी नवीन जानकारियाँ प्राप्त हुई हैं। जैसे (१) 'गंग' अब तक एक ही माना जाता है जो अकबर के दरबार में था। परंतु खोज में एक दूसरे 'गंग' का भी पता चला है जिसकी भाषा को 'तरल तरंग' कहा गया है और जो संवत् १६६४ के लगभग विद्यमान था। अतः स्पष्ट है कि 'गंग' नाम के दो कवि हुए हैं और वे दोनों ही प्रतिभाशाली थे। (२) ब्रजवासी 'उदयराम' की 'जोगलीला' नामक रचना 'उदयनाथ कवींद्र' के नाम से मानी गई है जिसका परिहार होना चाहिए। (३) 'आलम' दो माने गए हैं, एक अकबरकालीन और दूसरा मोअज्जमशाह के समय में; परंतु अब स्पष्ट हो गया है कि आलम नाम के एक ही कवि हुए हैं जो अकबर के समय में वर्तमान थे। (४) जगजीवन साहब जो सतनामी पंथ के प्रवर्तक थे, दादू के शिष्य या अनुयायी नहीं थे, जैसा कि माना जाता है। वे बिसेसरपुरी और बुल्लासाहब के शिष्य थे। इसी तरह अन्य बहुत से कवियों के संबंध में भी भ्रांतियाँ हैं जिनका उल्लेख करना इस विवरण में संभव नहीं। हाँ, इतना और लिख देना उचित होगा कि खोज-कार्य का महत्त्व दिन-प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है। इसके द्वारा उपलब्ध सामग्री का अध्ययन कर अनेक विद्वान् और विश्वविद्यालयों के

स्नातक अपने अनुसंधान-कार्यों में समुचित लाभ उठाते हैं। उन्हें एक ही स्थान पर विपुल सामग्री भी मिल जाती है जिससे इधर-उधर दौड़ने का उनका बहुत सा परिश्रम बच जाता है।

खोज-संबंधी मुख्य सूचनाएँ

आगे खोज-संबंधी मुख्य-मुख्य बातों का निम्नलिखित क्रम से उल्लेख किया जायगा—

१—खोज-विभाग की स्थापना, २—कौन-कौन अध्यक्ष (निरीक्षक) और कौन कौन अन्वेषक रहे, ३—कहाँ कहाँ खोज हुई, ४—कितना धन व्यय हुआ, ५—कितनी रिपोर्टें छपीं, ६—कितने ग्रंथों के विवरण लिए गए, ७—शताब्दि-क्रम से ग्रंथों का विभाग, ८—कितने ग्रंथ सभा को मिले और ६—नवीन महत्त्वपूर्ण ग्रंथ और उनके रचयिताओं का उल्लेख।

१—खोज-विभाग की स्थापना

खोज-विभाग की स्थापना संवत् १६५७ वि० (सन् १६०० ई०) में हुई।

२—अध्यक्ष (निरीक्षक) और अन्वेषक

इस विभाग के अध्यक्षों (निरीक्षकों) और अन्वेषकों के नाम १६५० ई० तक उनके कार्य-काल के अनुसार इस क्रम से हैं—

अध्यक्ष (निरीक्षक)	कार्य-काल	अन्वेषक
बाबू श्यामसुंदरदास	१६००–१६०८ ई०	श्री अमरसिंह, श्री चतुर्भुजसहाय वर्मा।
डा० श्यामविहारी मिश्र	१६०६–१६२० ई०	श्री चतुर्भुजसहाय वर्मा, श्री देवनारायण महता, श्री वासुदेवसहाय।
पं० शुकदेवविहारी मिश्र	१६२१–१६२२ ई०	श्री वासुदेवसहाय, श्री बाबूराम बित्थरिया, श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित, श्री छोटेलाल त्रिवेदी।
बा० श्यामसुंदरदास	१६२२–१६२३ ई०	श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित, श्री बाबूराम बित्थरिया, श्री छोटेलाल त्रिवेदी।

डा० हीरालाल	१६२३–१६३४ ई०	श्री बाबूराम बित्थरिया, श्री छोटेलाल त्रिवेदी, श्री सुखदेव शास्त्री, श्री लक्ष्मीप्रसाद त्रिवेदी।
डा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल	१६३४–१६४० ई०	श्री बाबूराम बित्थरिया, श्री लक्ष्मीप्रसाद त्रिवेदी, श्री दौलतराम जुयाल।
पं० विद्याभूषण मिश्र	१६४०–१६४१ ई०	श्री दौलतराम जुयाल, श्री महेशप्रसाद गर्ग।
डा० वासुदेवशरण अग्रवाल	१६४१–१६४२ ई०	श्री दौलतराम जुयाल, श्री उदयशंकर त्रिवेदी।
पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र	१६४२–१६५० ई०	श्री दौलतराम जुयाल, श्री विद्याधर त्रिवेदी, श्री कृष्णकुमार वाजपेयी।
डा० वासुदेवशरण अग्रवाल	१६५० ई०	श्री दौलतराम जुयाल।

३—वे स्थान जहाँ खोज हो चुकी है

जहाँ-जहाँ विस्तृत रूप से खोज हो चुकी है उन जिलों के नाम इस प्रकार हैं—

अलीगढ़, मथुरा, बुलंदशहर, इलाहाबाद, प्रतापगढ़, मेरठ, रायबरेली, फर्रुखाबाद, फैजाबाद, लखनऊ, भरतपुर राज्य, गोंडा, फतेहपुर, बाराबंकी, बहराइच, सुलतानपुर, सीतापुर, खीरी, उन्नाव, आगरा, एटा, मैनपुरी, इटावा, बलिया, आजमगढ़, गोरखपुर, गाजीपुर, जौनपुर और बस्ती।

[टिप्पणी—प्रारंभ में खोज का काम केवल सार्वजनिक, व्यक्तिगत, और राज-पुस्तकालयों तथा प्रधान-प्रधान नगरों तक ही सीमित था जिसके अनुसार लगभग समस्त उत्तरप्रदेश, बुंदेलखंड एजेंसी, जोधपुर और जयपुर के राज्यों तथा काँगड़ा (पंजाब) क्षेत्र में ग्रंथ खोजे जा चुके थे। परंतु पीछे सन् १६१७ से सभा के निश्चयानुसार खोज-कार्य का विस्तार गाँवों तक हो गया। इसके अनुसार जिले का प्रत्येक गाँव देखना पड़ता है जिसमें लगभग तीन वर्ष लग जाते हैं। इस नवीन प्रणाली के अनुसार जितने जिलों में कार्य हुआ उन्हीं का नामोल्लेख यहाँ किया गया है।]

४—व्यय

इस कार्य में प्रारंभ से लेकर अब तक ८४४६१॥≋)॥। रुपया व्यय हुआ।

५—मुद्रित एवं प्रस्तुत रिपोर्टों की संख्या

अब तक बारह रिपोर्टें (छः वार्षिक और छः त्रैवार्षिक) छप चुकी हैं और आगे की सात तैयार हैं तथा संवत् २००४–२००६ वि० (सन् १९४७–५० ई०) की रिपोर्ट तैयार हो रही है।

६—ग्रंथों और रचयिताओं की संख्या

अब तक कुल १४६७३ ग्रंथों और ६०९५ रचयिताओं एवं कवियों का पता लग चुका है।

७—ग्रंथकारों और ग्रंथों का शताब्दि-क्रम

शताब्दि-क्रम से ग्रंथकारों और ग्रंथ का विभाग इस प्रकार है—

शताब्दी	११वीं	१३वीं	१४वीं	१५ वीं	१६वीं	१७वीं	१८वीं	१९ वीं	२०वीं	अज्ञात	योग
ग्रंथकार	१	२	३३	६	३५८	७९७	१२३०	१३४२	११०	२२१६	६०९५
ग्रंथ	१	२	४८	१४३	१०८०	१८३३	२६५१	२६१०	१९१	६१८७	१४७४६

विक्रमीय ग्यारहवीं शती में धनपाल और उनकी कृति 'भविष्यदत्त की कथा' (अपभ्रंश रचना), तेरहवीं में चंद और नरपति नाल्ह के क्रमशः पृथ्वीराज रासो और बीसलदेव रासो, चौदहवीं में सिद्ध और नाथ एवं उनकी रचनाएँ तथा पंद्रहवीं में विद्यापति, विष्णुदास, लखनसेनी, कबीर, रामानंद और रैदास प्रभृति एवं उनके ग्रंथ हैं। सोलहवीं शताब्दी से प्रचुर मात्रा में रचयिता और उनके ग्रंथ मिले हैं, अतः उनके संबंध में विवरण देना अनावश्यक है। शताब्दि-क्रम के प्रस्तुत वर्गीकरण से स्पष्ट है कि हिंदी की रचनाएँ चौदहवीं शताब्दी से ही अविच्छिन्न रूप से मिलती हैं। रासो नामक ग्रंथों के विषय में अभी विवाद ही चल रहा है।

८–सभा के लिये प्राप्त ग्रंथों की संख्या

अब तक लगभग १४१३ हस्तलेख जिनमें २१२८ ग्रंथ हैं, अन्वेषकों द्वारा सभा के लिये प्राप्त किए गए हैं।

६—महत्त्वपूर्ण ग्रंथों और रचयिताओं का परिचय

महत्त्वपूर्ण ग्रंथों और उनके रचयिताओं का उल्लेख आगे निम्नलिखित क्रम से किया जायगा—

१—रासो, इतिहास और विरुदावलियाँ, २—सिद्धों का साहित्य (योग-धारा), ३—संत-साहित्य (निर्गुणधारा), ४—कृष्ण और रामभक्ति साहित्य (सगुणधारा), ५—सूफी प्रेमकथाएँ, ६—भारतीय प्रेमकथाएँ, ७—साहित्यशास्त्र (रस, अलंकार, काव्यरचना और रीति), ८—पिंगल, ९—कोश, १०—काव्य, ११—नाटक, १२—आत्मकथा, परिचयी और वार्ता, १३—यात्रा, १४—लावनी और ख्याल तथा १५—गद्य-ग्रंथ।

(१) रासो, इतिहास और विरुदावलियाँ

सं० ग्रंथ	ग्रंथकार	रचनाकाल	लिपिकाल	विशेष
१—पृथ्वीराज रासो	चंद बरदाई	सं० १२५०		इसकी ३४ प्रतियाँ मिली हैं जिनमें से एक में लिपिकाल सं० १६४० है।
२—बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह	सं० १३५५	सं० १६६९	
३—खुमान रासो	दलपति	×	×	
४—गजसिंह महाराज जी का गुण रूपक कथा	केशवदास चारण	सं० १६८१	सं० १७८०	
५—रसपाय नायक	महाराज राजसिंह	१८वीं शती	×	
६—हिम्मतबहादुर-विरुदावली	पद्माकर	१९ वीं शती	×	
७—हरिदौल चरित्र	बिहारीलाल	सं० १८१५	×	
८—अकबरनामा	सेवक	×	×	सं० १४१४ से १८८८ तक का इतिहास
९—रतन बावनी	केशवदास	१७ वीं शती	×	
१०—वीरसिंहदेव चरित्र	„	„	×	
११—छत्रप्रकाश	गोरेलाल पुरोहित 'लाल'	१८ वीं „	×	
१२—जैचंद वंशावली	सतीप्रसाद	×	×	

१३—जगतराज दिग्विजय	हरिकेश द्विज	१८वीं शती
१४—राणारासा	दयालदास	१७वीं ,,
१५—सुजानचरित्र	सूदन	१८ वीं ,,
१६—वैस वंशावली	शंभुनाथ त्रिपाठी	१८ वीं ,,
१७—सोमवंश की वंशावली	देवीदास	सं० १८३१
१८—छत्रसाल विरुदावली	निवाज	१८ वीं शती
१९—भगवंतराय खीची को विरुदावली	गोपालराय	१८ वीं ,,
२०—भगवंतराय खीची की विरुदावली	शंभुनाथ	१८ वीं ,,

(२) सिद्ध-साहित्य (योगधारा)

ग्रंथ	रचयिता	रचनाकाल
१—सबदी, पद और गोरखबोध आदि	गोरखनाथ	वि० चौदहवीं शती
२—सबदी	भरथरी	,,
३—सबदी	चिरपट	,,
४—सबदी	गोपीचंद	,,
५—सबदी	जलंधरीपाव	,,
६—सबदी	पृथ्वीनाथ	,,
७—सबदी	चौरंगीनाथ	,,
८—सबदी	कणेरीपाव	,,
९—सबदी	हालीपाव	,,
१०—सबदी	मींडकी पाव	,,
११—सबदी	हणवंत	,,
१२—सबदी	नागा अर्जुन (नागार्जुन)	,,
१३—सबदी	सिद्ध हरताली	,,
१४—सबदी	सिद्ध गरीब	,,
१५—सबदी	धूँधलीमल	,,
१६—सबदी	रामचंद्र	,,
१७—सबदी	बालगोदाई	,,

१८—सबदी	घोड़ाचोली	चौदहवीं शती
१६—सबदी	अजैपाल	,,
२०—सबदी	चौणकनाथ	,,
२१—सबदी	देवलनाथ	,,
२२—सबदी	महादेव	,,
२३—सबदी	पारबती	,,
२४—सबदी	सिद्ध मालीपाव	,,
२५—सबदी	सुकुलहंस	,,
२६—सबदी	दत्तात्रेय	,,
२७—सबदी	लाल या ठीकर	,,
२८—सबदी	सतवंती	,,

(३) निर्गुणधारा (संत-साहित्य)

१—पद, साखी और बानी	नामदेव	१४ वीं शती
२—पद, साखी और रमैनी आदि	कबीर	१५ वीं ,,
३—पद, साखी, शब्द और प्रह्लादलीला	रैदास	,, ,,
४—ज्ञानतिलक, रामरक्षा आदि	स्वामी रामानंद	,, ,,
५—बानी	पीपा	१५ वीं ,,
६—अष्टांगयोग, गुरु नानक वचन, ज्ञानस्वरोदय, नानक जी का जाप, सुखमनी	नानक	१६वीं ,,
७—पद और साखी	दादूदयाल	१७वीं ,,
८—सुंदरविलास, ज्ञानसमुद्र, बानी	सुंदरदास	,, ,,
६—बानियाँ तथा पद आदि	हरिदास निरंजनी	१६वीं ,,
१०—पद, साखी, रेखता आदि	सेवादास निरंजनी	१७वीं ,,
११—पद, बानी आदि	तुरसीदास निरंजनी	१८वीं ,,
१२—बानियाँ और पद आदि	जगजीवन साहब	१८वीं ,,
१३—बानियाँ और पद	बाबा दूलनदास	,, ,,
१४—पद	बावरी साहिबा	१७वीं ,,
१५—पद	बीरू साहब	,, ,,

१६—शब्द, रमैनी और कहरा	यारी साहब	१७वीं शती
१७—साखी और शब्द	बुल्ला साहब	१८वीं ,,
१८—पद और शब्द	गुलाल साहब	,, ,,
१९—कुंडलिया, रेखता तथा शब्दावली	भीखा साहब	,, ,,
२०—शब्दावली	विरंच गोसाईं	२०वीं ,,
२१—मंगलगीता	नवनिधिदास बाबा	२०वीं ,,
२२—पद तथा अन्य रचनाएँ	धरनीदास	१८वीं ,,
२३—भक्तमाल (इसमें निर्गुणी संतों का उल्लेख है)	राघवदास	,, ,,
२४—पलटूदास की बानी	पलटूदास	१९वीं ,,
२५—शून्यविलास	संतदास	×
२६—पद तथा बानियाँ	बाबा रामचरणदास (रामसनेही पंथी)	१९वीं ,,
२७—पद	उमा	,, ,,
२८—रामायण और विश्वकारण	कुदरतीदास	१९वीं ,,
२९—पद तथा अन्य रचनाएँ	शिवनारायण स्वामी	१८वीं ,,
३०—बानी	मलूकदास	१७वीं ,,

(४) रामकृष्ण भक्ति साहित्य (सगुणधारा)

१—रामचरितमानस (चार प्रतियाँ प्राचीन हैं—१—महाराज बनारस की, लि० का० सं० १७०१; २—अयोध्या की प्रति, सं० १६६१; ३—राजापुर की प्रति, ४—सेवादास की प्रति, सं० १७२२ जो भारत कलाभवन में है)	गो० तुलसीदास	१७वीं शती
२—भक्तमाल	नाभादास	१७वीं शती
३—ध्यानमंजरी और कुंडलिया	अग्रदास	,, ,,
४—पदावली रामचरित्र सात कांड	काष्ठजिह्वादेव	१९वीं शती
५—शृंगाररस मंडन	गो० विट्ठलनाथ	१७वीं शती
६—सूरसागर (प्राचीन प्रतियाँ दो हैं—१—सं० १७४५, २—सं०१७९८)	सूरदास	,, ,,

७—पद या परमानंदसागर	परमानंददास	१७वीं शती
८—रासपंचाध्यायी, भ्रमरगीत और भागवत आदि	नंददास	,, शती
९—पद	व्यास स्वामी	,, शती
१०—हित चौरासी	हित हरिवंश जी	,, शती
११—कवित्त, सवैया और दानलीला	रसखान	,, शती
१२—बानी और ब्यालीस लीला	ध्रुवदास	,, शती
१३—हित चरित्र	भगवतमुदित	,, शती
१४—पद और बानियाँ	चाचा वृंदावनदास	१८वीं शती
१५—पद	श्रीभट्ट जी (निंबार्क)	१६वीं शती
१६—पद और महाबानी	हरिव्यासदेव जी	,, शती
१७—परशुरामसागर	परशुराम	१७वीं शती
१८—पद तथा बानियाँ	स्वामी हरिदास (टट्टी संप्र०)	,, शती
१९—पद	मीराबाई	,, शती
२०—पद	गंगाबाई	,, शती
२१—चंद्रचौरासी	गो० चंद्रप्रभु (माध्व संप्र०)	,, शती
२२—पद तथा अन्य रचनाएँ	नागरीदास (राजा सावंतसिंह)	१८वीं शती
२३—कवित्त, सवैया तथा अन्य रचनाएँ	घनानंद	१८वीं शती
२४—हरिलीला सोलहकला	भीम	१६वीं शती
२५—कृपाकल्पतरु	रूपरसिक	१७वीं शती
२६—कुलजमस्वरूप	स्वामी प्राणनाथ(धामी संप्र०)	१८वीं शती
२७—रघुराजविलास, जदुराजविलास आदि	राजा रघुराजसिंह	२०वीं शती
२८—राधारमण-विहार-माधुरी और मानमाधुरी आदि	माधुरीदास	१७वीं शती

(५) सूफ़ी प्रेमकथानक काव्य

१—पद्मावती	जायसी	१६वीं शती
२—मृगावती की कथा	कुतुबन	१६वीं शती
३—इंद्रावत	नूरमुहम्मद	१८वीं शती
४—हंसजवाहिर	कासिमशाह	१८वीं शती
५—ज्ञानदीप	शेख नबी	१७वीं शती

६—कामरूप की कथा	हरिसेवक	१६वीं शती
७—प्रेमरत्न	फाजिलशाह	१६वीं शती
८—पुहुपावती	दुःखहरण	१८वीं शती
९—यूसुफ जुलेखा	शेखनिसार	१९वीं शती
१०—हंसनामा	नजीर	२०वीं शती
११—कासिदनामा	हैदर	×

(६) भारतीय प्रेमकथाएँ

१—लक्ष्मणसेन पद्मावती कथा	दामो	१६वीं शती
२—ढोला मारवणी की कथा	हरराज	१७वीं शती
३—मृगावती की कथा	मेघराज प्रधान	१८वीं शती
४—मकरध्वज की कथा	,, ,,	१८वीं शती
५—रसरत्न	पुहकर कवि	१७वीं शती
६—छिताई की कथा	रतनरंग	१७वीं शती
७—कामरूप का किस्सा	×	२०वीं शती
८—मैनसत के उत्तर	गंगाराम	×
९—रत्नावती,रतनमंजरी,पुहुपवरिखा आदि	जान कवि	१७वीं शती
१०—गोराबादल पद्मिनी चौपाई	हेमरतन	१७वीं शती
११—माधवानल कामकंदला	आलम	१७वीं शती
१२—प्रेमविलास प्रेमलता कथा	जटमल नाहर	१७वीं शती
१३—चतुर्मुकुट की कथा	×	×
१४—मधुमालती की कथा	चतुर्भुजदास	१६वीं शती
१५—पद्मावती चरित्र	लालचंद या लब्धोदय	१८वीं शती
१६—सुरसुंदरी चरित्र	रेड़ मुनि	१७वीं शती

(७) साहित्यशास्त्र (रस, अलंकार, काव्य-रचना और रीति)

१—कविप्रिया	केशवदास	१७वीं शती
२—रसिकप्रिया	,,	१७वीं शती
३—काव्यनिर्णय, रससार, शृंगारनिर्णय	भिखारीदास	१८वीं शती
४—हिततरंगिनी	कृपाराम	१६वीं शती
५—रूपविलास	रूपसाहि	१९वीं शती
६—अलंकारमणिमंजरी	ऋषिनाथ	१८वीं शती

७—व्यंगार्थकौमुदी	प्रतापसाहि	१६वीं शती
८—काव्यविलास	"	१६वीं शती
६—काव्यसरोज	श्रीपति	१८वीं शती
१०—काव्यसुधाकर	"	१८वीं शती
११—साहित्यसार, रसराज और लक्षणशृंगार	मतिराम	१८वीं शती
१२—काव्यरसायन	देव	१८वीं शती
१३—भावविलास	देव	१८वीं शती
१४—भाषा काव्यप्रकाश	बलभद्र	१७वीं शती
१५—काव्यसिद्धांत, रसरत्नाकर, अलंकारमाला, रसगाहकचंद्रिका	सूरत मिश्र	१८वीं शती
१६—दूषणदर्पण	ग्वाल	१६वीं शती
१७—रसरंग	"	१६वीं शती
१८—काव्याभरण, रसकल्लोल, केसरीप्रकाश	चंदन भाट	१६वीं शती
१६—दक्षणविलास	अहमदुल्ला	१८वीं शती
२०—कविकुल कल्पतरु	चिंतामणि	१८वीं शती
२१—रसमंजरी	हरिवंश टंडन	१८वीं शती
२२—कविसर्वस्व	जयगोविंद वाजपेयी	१८वीं शती
२३—काव्यरस	राजा जयसिंह	१८वीं शती
२४—सत्कविकुलदीपिका	भारतसाहि	१६वीं शती
२५—कविकुलतिलकप्रकाश	महीप या महीपति	१८वीं शती
२६—जगद्विनोद, पद्माभरण	पद्माकर	१६वीं शती
२७—सुंदर शृंगार	सुंदर कविराय	१७वीं शती
२८—रसरसार्णव	सुखदेव मिश्र	१८वीं शती
२६—रसरहस्य, युक्तितरंगिणी	कुलपति मिश्र	१८वीं शती
३०—रसविलास, अलंकारशिरोमणि, टिकैतराय प्रकाश	बेनी कवि	१६वीं शती
३१—नवरस तरंग, नानाराव प्रकाश	बेनी प्रवीन	१६वीं शती
३२—दलेलप्रकाश	थान कवि	१६वीं शती
३३—पशुपक्षी नायक नायिका लक्षण	बोधा	१७वीं शती
३४—सनेहतरंग	रावराजा बुद्धसिंह	१८वीं शती

३५—विक्रमविलास	नेवजीलाल दीक्षित	१७वीं शती
३६—वाग्विलास	सेवक	१६वीं शती
३७—हरिनाथ विनोद	लघुकान्ह	२०वीं शती
३८—शृंगार विलास	सोमनाथ	१६वीं शती
३६—रसरत्नावली	मंडन	१८वीं शती
४०—अंतर्लापिका	दीनदयालगिरि	२०वीं शती
४१—शिवराजभूषण	भूषण	१८वीं शती
४२—रामप्रकाश	मुनिलाल	×
४३—कविकुलकंठाभरण	दूलह	१६वीं शती
४४—भाषाभूषण	राजा जसवंतसिंह	१८वीं शती
४५—भाषाभूषण	श्रीधर मुरलीधर	१८वीं शती
४६—श्लेषार्थविंशति	कान्ह	×
४७—यमकालंकार	वृंद कवि	१८वीं शती
४८—कविताकल्पतरु	सागर कवि	१८वीं शती
४६—वधूविनोद	कालिदास त्रिवेदी	१८वीं शती
५०—रसचंद्रोदय	उदयनाथ कवींद्र	१८वीं शती

(८) पिंगल

१—छंदार्णवपिंगल, छंदप्रकाश	भिखारीदास	१८वीं शती
२—भाषापिंगल	चिंतामणि त्रिपाठी	१८वीं शती
३—छंदसार पिंगल	मतिराम	१८वीं शती
४—पिंगल, वृत्तविचार, छंदविचार	सुखदेव मिश्र	१८वीं शती
५—छंदसार	सूरत मिश्र	१८वीं शती
६—माधवसुयशप्रकाश	छविनाथ	१६वीं शती
७—पिंगल	चतुर्भुज	१७वीं शती
८—षटपद के भेद (छप्पय छंदों के भेद; प्राचीन रचना है।)	×	×
६—रूपदीपपिंगल	जयकृष्ण भोजग	१८वीं शती
१०—छंदरत्नावली	हरिराम	×

(६) कोश

१—अनेकार्थमंजरी और नाममंजरी	नंददास	१७वीं शती

२—नामप्रकाश	भिखारीदास	१८वीं शती
३—नामरत्नमाला कोश	गोकुलनाथ	१६वीं शती
४—नामचिंतामणि	नवलसिंह प्रधान	२०वीं शती
५—नाममाला	चंदन	२०वीं शती

(१०) काव्य

१—पंचसहेलरी रा दूहा	छीहल	१६वीं शती
२—अहिल्या पूर्व प्रसंग	बारहट नरहरदास	१७वीं शती
३—सतसई	बिहारीलाल	१८वीं शती
४—मतिराम सतसई	मतिराम	१८वीं शती
५—सतसई	भूपति (राजा गुरुदत्तसिंह)	१८वीं शती
६—चंदन सतसई	चंदन भाट	२०वीं शती
७-रुक्मिणी मंगल, छप्पय और कवित्त	नरहरि	१६वीं शती
८—बाहुविलास	राजा राजसिंह	१८वीं शती
९—अनुरागबाग, चकोरपंचक, दीपकपंचक	दीनदयाल गिरि	२०वीं शती
१०—रामरसायन	पद्माकर	१९वीं शती
११—कवित्त	ठाकुर	१९वीं शती
१२—जंजीराबंद	कालिदास	१८वीं शती
१३—रामचंद्रिका	केशवदास	१७वीं शती
१४—कलिचरित्र	बाण कवि	१७वीं शती
१५—प्रेमदीपिका	अक्षर अनन्य	१८वीं शती
१६—बरवै, मदनाष्टक और सतसई	रहीम	१७वीं शती
१७—कवित्तरत्नाकर	सेनापति	१७वीं शती
१८—प्रेमतरंगचंद्रिका आदि	देव	१८वीं शती
१९—कवित्त	आलम और शेख	१७वीं शती
२०—सुदामाचरित्र और स्यामसनेही	आलम	१७वीं शती
२१—नखशिख	बलभद्र	१८वीं शती
२२—गुलजार चमन	शीतल	१८वीं शती
२३—राधाकृष्णविलास	गोकुल बंदीजन	१९वीं शती
२४—हम्मीरहठ, भक्तभावन और गोपीपच्चीसी	ग्वाल	१९वीं शती

२५—हम्मीरहठ	चंद्रशेखर वाजपेयी	१६वीं शती
२६—कवित्त	गंग	१७वीं शती
२७—सूक्तिमुक्तावली या बनारसीविलास	बनारसीदास	१८वीं शती
२८—रामायण रामविलास	ईश्वरी त्रिपाठी	१६वीं शती
२६—कन्हैयाजन्म,वंशी,बंजारनामा,हंसनामा	नजीर	१७वीं शती
३०—हरिभक्तिप्रकाश	गंगाराम पुरोहित 'गंग'	१८वीं शती
३१—सुदामाचरित्र	नरोत्तमदास	१७वीं शती
३२—सुदामाचरित्र	कलीराम	१८वीं शती
३३—रासपंचाध्यायी	जनगोपाल	१७वीं शती
३४—कान्हकी बारहमासी, हरिचरित्र विराटपर्व	लखनसेनी	१५वीं शती
३५—वाग्विलास	सेवक	२०वीं शती
३६—सत्यवती कथा, भरतविलाप	ईश्वरदास	१६वीं शती
३७—जेहली जवाहिर	प्राणनाथ सोती	१८वीं शती
३८—जोगलीला	उदयराम	१८वीं शती
३६—दशकुमारचरित	शिवदत्तत्रिपाठी	१८वीं शती
४०—दिग्विजै चंपू	शिवदास गदाधरदास	२०वीं शती
४१—वियोगसागर, मोहनी	शेख अहमद	१८वीं शती
४२—लक्ष्मणशतक	समाधान	×
४३—रसघमार और खटमल बाईसी	अलीमुहिब खाँ 'प्रीतम'	१८वीं शती
४४—भाषा भक्तचंद्रिका	विश्वनाथसिंह	१६वीं शती
४५—प्रेमरससागर और कृष्णचंद्रिका	अखैराम	१६वीं शती
४६—प्रेमपचीसी	सोमनाथ	१६वीं शती
४७—कवित्त	राजा बीरबल	१९वीं शती
४८—विरही सुभान दंपतिविलास	बोधा	१६वीं शती
४६—द्वारिका विलास	रामनारायण	१६वीं शती
५०—जानकीविजय रामायण	प्रसिद्ध	१६वीं शती
५१—श्रीपालचरित्र	परिमल्ल कवि	१७वीं शती
५२—विरहविलास	हंसराज बख्शी	१८वीं शती
५३—सुदामाचरित्र	भूधरदास	१७वीं शती
५४—भूधरविलास	भूधरदास	१८वीं शती

(११) नाटक

१—प्रबोधचंद्रोदय नाटक	राजा जसवंतसिंह	१८वीं शती
२—प्रबोधचंद्रोदय नाटक	सूरत मिश्र	१८वीं शती
३—करुणाभरण नाटक	लच्छीराम	१८वीं शती
४—नहुष नाटक	गिरिधरदास	२०वीं शती

(१२) आत्मकथा, परिचयी और वार्ता

१—अर्द्धकथानक	बनारसीदास	१७वीं शती
२—पीपा की परिचयी	अनंतदास	१७वीं शती
३—कबीर की परिचयी	,,	१७वीं शती
४—त्रिलोचन की परिचयी	,,	१७वीं शती
५—धना जी की परिचयी	,,	१७वीं शती
६—नामदेव की परिचयी	,,	१७वीं शती
७—रैदास की परिचयी	,,	१७वीं शती
८—राँका बाँका की परिचयी	,,	१७वीं शती
९—सेउ समद की परिचयी	,,	१७वीं शती
१०—हरिदास निरंजनी की परिचयी	रघुनाथदास	१८वीं शती
११—सेवादास की परिचयी	,,	१८वीं शती
१२—चौरासी वैष्णवन की वार्ता	गो० गोकुलनाथ	१७वीं शती
१३—दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता	गो० गोकुलनाथ	१७वीं शती

(१३) यात्रा

१—वनयात्रा	श्रीमन महाराज जी की माँ	२०वीं शती
२—बद्रीनाथ यात्रा कथा	अयोध्यानरेश बख्तावरसिंह की धर्मपत्नी	१९वीं शती
३—वनयात्रा	गो० गोकुलनाथ	१७वीं शती

(१४) लावनी और ख्याल

१—बारहमासी	खैराशाह	२०वीं शती
२—लावनी तत्सत	ननवाँ शुक्ल	२०वीं शती
३—ख्याल वर्षा	गिरिधारीसिंह	२०वीं शती
४—लावनी समझप्रकाश	सुखलाल	२०वीं शती
५—ख्याल हसा जवान	प्रभुदयाल	२०वीं शती

६—ख्याल वियोग	प्रभुदयाल	२०वीं शती
७—बारहमासी ख्याल	छज्जू	२०वीं शती

(१५) गद्य ग्रंथ

१—गोरखनाथ का गद्य (प्राचीन खड़ी बोली)	गोरखनाथ	१४वीं शती
२—योगाभ्यास मुद्रा (खड़ी बोली)	कुमरिपा	१४वीं शती
३—शृंगार मंडन (व्रज)	गो० विट्ठलनाथ	१७वीं शती
४—चंद छंद बरनन की महिमा (खड़ी बोली)	गंग	१७वीं शती
५—नासिकेत पुराण (व्रज)	नंददास	१७वीं शती
६—बैतालपचीसी (व्रज)	सूरत मिश्र	१८वीं शती
७—व्यवहारपाद (व्रज)	प्रियादास	२०वीं शती
८—योगवाशिष्टसार (खड़ी बोली)	रामप्रसाद निरंजनी	१८वीं शती
९—तीरंदाजी रिसाला (खड़ी बोली)	ख्वाजा महम्मद फाजिल	१९वीं शती
१०—वचनिका (व्रज)	बनारसीदास	१७वीं शती
११—इकतालीस शिक्षापत्र (व्रज)	गोपेश्वर जी	१८वीं शती
१२—पंचायत का न्यायपत्र (अवधी)	फणींद्र मिश्र	१७वीं शती
१३—ज्योतिष और गोलाध्याय (खड़ी बोली)	तामसन साहब	१९वीं शती
१४—चौरासी वैष्णवन की वार्ता (व्रज)	गो० गोकुलनाथ	१७वीं शती
१५—दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता (व्रज)	गो० गोकुलनाथ	१७वीं शती
१६—भूगोलसार (खड़ी बोली)	श्रीलाल	२०वीं शती
१७—आचार्य महाप्रभून की द्वादश निजी वार्ता	हरिराय	१७वीं शती
१८—पांडवपुराण (जैन रचना)	×	१७वीं शती
१९—तत्वज्ञान तरंगिणी (जैन रचना)	×	×
२०—आदिपुराण की बालबोध वचनिका	दौलतराम	१९वीं शती
२१—पुण्याश्रव कथाकोस	दौलतराम	१८वीं शती

दौलतराम जुयाल
साहित्यान्वेषक
काशी नागरीप्रचारिणी सभा

परिशिष्ट

[इसमें प्रत्येक विवरणिका में आए हुए महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का उल्लेख है। शीर्षकों में विवरणिका के वर्ष देकर उनके नीचे विवरणिका में आए ग्रंथों के नाम आदि दिए गए हैं। 'वि०' से विक्रमीय संवत्, 'हि०' से हिजरी सन् तथा 'रि० पृ०' से मुद्रित रिपोर्टों की पृष्ठ-संख्या का निर्देश किया गया है।]

संवत् १९५७ (सन् १९०० ई०)

सं०	ग्रंथ	रचयिता	रचनाकाल	लिपिकाल	रि० पृ०
१	रामचरित्रमानस (बनारस राज-पुस्तकालय में सुरक्षित)	गो० तुलसीदास	१६३१ वि०	१७०१ वि०	१५ और भूमिका सं० १, पृ० २
२	पद्मावती	जायसी	१५९७ वि०	१७४७ वि०	५० और भूमिका
३	मृगावती (शेरशाह सूर के समय की रचना)	कुतुबन	×	×	१७ और भूमिका
४	लक्ष्मणसेन पद्मावती कथा	दामो	१५१६ वि०	१६६९ वि०	७५
५	ढोला मारवणी चौपाई	हरराज	१६०७ वि०	१६६९ वि०	८४
६	पृथ्वीराजरायसो महोबाखंड	चंद बरदाई	×	१८७८ वि०	५२
७	पृथ्वीराज चौहान रासौ	,,	×	×	५७
८	पृथ्वीराज चौहान रासौ (७ और ८ कविराजा कृष्णसिंह की प्रतियाँ हैं, जिन्होंने टाड साहब को रासो पढ़ाया था।)	,,	×	१६४० वि०	५८
९	राजा बीसलदेव रासा	नरपति नाल्ह	१२२० वि०	१६६९ वि०	७७

संवत् १९५८ वि० (सन् १९०१ ई०)

सं०	ग्रंथ	रचयिता	रचनाकाल	लिपिकाल	रि०पृ०
१०	रामचरित्रमानस (बालकांड की प्रति में ही लि०का० सं० १६६१ है, शेष कांड १८८६ के लिखे हैं।)	गो० तुलसीदास	१६३१ वि०	१६६१ वि०	२८
११	पृथ्वीराज चौहान रासौ (२६ पर्व)	चंद बरदाई	×	×	४२
१२	पृथ्वीराज चौहान रासौ (३२ पर्व)	,,	×	×	४३
१३	पृथ्वीराज चौहान रासौ (७ पर्व)	,,	×	×	४३
१४	प्रेमसंपुट	सुंदरिकुँवरि,राजा सावंतसिंह(नागरीदास) की बहिन	१८४५वि०	×	७५
१५	भावनाप्रकास	,,	१८४६वि०	×	८१
१६	वृंदावनगोपीमाहात्म्य	,,	१८२३वि०	×	८०
१७	बिहारी सतसई	बिहारीलाल	×	१७७५वि०	३३,४८,६३

संवत् १९५९ वि० (सन् १९०२ ई०)

सं०	ग्रंथ	रचयिता	रचनाकाल	लिपिकाल	रि०पृ०
१८	दसमस्कंध (भागवत) भाषा	नरहरदास बारहट, मारवाड़-नरेश सूरसिंह, गजसिंह और जसवंतसिंह के आश्रित	×	×	३७
१९	रामचरित्रकथा, काकभुसंडी गरुड़-संवाद	,, ,,	×	×	,,
२०	अहिल्या पूर्व प्रसंग	,, ,,	×	×	,,
२१	नरसिंह अवतारकथा	,, ,,	×	×	३८
२२	अवतार चरित्र	,, ,,	×	१८३३वि०	६०

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि०पृ०
२३	महाराज गजसिंह जी का गुण रूपक बंध	चारण केशवदास, महाराज गजसिंह (जोधपुर) के आश्रित	१६८१वि०	१७८०वि०	१९
२४	विवेकवार्ता	” ”	१६२४वि०	×	८२
२५	अपोछसिद्धांत (अपरोक्षसिद्धांत)	राजा जसवंतसिंह (जोधपुरनरेश राज्यमल, १६८२–१७३५ वि०)	×	×	१६
२६	अनुभवप्रकाश	” ”	×	×	१६
२७	सिद्धांत बोध	” ”	×	×	१७
२८	आनंदविलास	” ”	१७२४वि०	×	१७
२९	प्रबोधचंद्रोदय नाटक भाषा	” ”	×	×	२१
३०	सिद्धांतसार	” ”	×	×	३५
३१	भाषाभूषण	” ”	×	×	३६
३२	रतनमहेसरासोत वचनिका	चारण जगाजी, राजा जसवंतसिंह (जोधपुर) के आश्रित	१७१५वि०	१८७२वि०	२५
३३	रैदास जी का साखी तथा पद	रैदास	×	×	४०
३४	रैदास जी का पद	”	×	१७०६वि०	६५
३५	गोरखबोध	गोरखनाथ	×	×	४३
३६	दत्तगोरख संवाद	”	१४०७वि०	×	७९
३७	गोरखनाथजी रा पद	”	”	×	”
३८	गोरखनाथजी के फुटकर ग्रंथ	”	”	×	”
३९	ज्ञानसिद्धांत जोग	”	×	×	८०
४०	ज्ञानतिलक	”	×	×	”
४१	जोगेश्वरी साखी	”	१४०७वि०	×	”
४२	नरवै बोध	”	”	×	८१
४३	विराटपुराण	”	”	×	८२
४४	कबीर जी का पद	कबीरदास	×	×	३८
४५	कबीर जी की साखियाँ	”	×	१७४०वि०	३९

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि० पृ०
४६	कबीर के दोहे	कबीरदास	×	×	३६
४७	कबीर जी के पद	,,	×	१६४६ वि०	८०
४८	कबीर जी की रमैनी	,,	×	,,	८०
४६	कबीर जी की साखी	,,	×	,,	८०
५०	कबीर जी को कृत	,,	×	,,	८०
५१	रसपाय नायक	राजा राज सिंह (कृष्णगढ़-नरेश, १७०६–४८)	×	×	५१
५२	बाहुविलास	,,	×	१७६२ वि०	५१
५३	अखरावट	जायसी	×	१६४३ वि०	७२
५४	इंद्रावत	नूरमुहम्मद	११५७ हि०	१६५६ वि०	७३
५५	हंसजवाहिर	कासिमसाह	११४६ हि०	१६५८ वि०	७४
५६	ज्ञानदीप	शेखनबी	१०२४ हि०	१६३२ वि०	७४

संवत् १९६० (सन् १९०३ ई०)

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि० पृ०
५७	पिंगल	चिंतामनि त्रिपाठी	×	१६५६ वि०	२६
५८	कविकुल कल्पतरु	चिंतामनि त्रिपाठी	१६५० वि०	×	८६
५६	प्रेमतरंग चंद्रिका	देव कवि	×	१८३७ वि०	२४
६०	भावविलास	देव कवि	×	१८५७ वि०	३१
६१	सुजनविनोद	देव कवि	×	१८५७ वि०	७३
६२	अष्टयाम	देव कवि	१६७७ वि०	१८१४ वि०	८६
६३	जहाँगीरचंद्रिका	केशवदास	१६६६ वि०	१८४८ वि०	३१
६४	राधाकृष्णविलास	गोकुलनाथ बंदीजन	१८५८ वि०	१८६० वि०	१४
६५	श्री सीताराम गुणार्णव रामायण (सप्तकांड)	,,	×	१९०६ वि०	२१
६६	कविमुखमंडन	,,	×	१८७० वि०	२८
६७	नामरत्नमाला	,,	१८७१ वि०	१८६३ वि०	८६
६८	ज्ञानसमुद्र	सुंदरदास	१७१० वि०	१८५७ वि०	२८
६६	शिवराजभूषण	भूषण	१७३० वि०	×	४२

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	वि० पृ०
७०	अनुभव पर प्रदर्शनी टीका	विश्वनाथसिंह (रीवाँ-नरेश)	×	१९०५ वि०	२०
७१	उत्तमकाव्यप्रकाश	,,	×	१८९६ वि०	३९
७२	शांतशतक	,,	×	१८९५ वि०	४०
७३	रामायण	विश्वनाथसिंह (रीवाँ-नरेश)	×	१८८९वि०	७८
७४	गीतारघुनंदन सटीक	,,	१८८९वि०	१८९०वि०	८९

संवत् १९६१ (सन् १९०४ ई०)

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	वि० पृ०
७५	भक्तसंजीवनी टीका	अग्रनारायण और वैष्णवदास	१८४४वि०	×	६५
७६	रससार	भिखारीदास	१७९१वि०	१८४३वि०	२४
७७	छंदार्णव	,,	×	×	३
७८	छंदप्रकाश	,,	×	×	,,
७९	शृंगारनिर्णय	,,	×	×	,,
८०	काव्यनिर्णय	,,	×	×	,,
८१	आनंद अनुभव	आनंद	१८२२वि०	×	,,
८२	अनुराग बाग	दीनदयाल गिरि	१८८८वि०	१८९२वि०	३१
८३	विश्वनाथनवरत्न	,,	×	×	३८
८४	चकोरपंचक	,,	×	×	५४
८५	दृष्टांत तरंगिणी	,,	१८७९वि०	×	५८
८६	काशीपंचरत्न	,,	×	×	६७
८७	दीपकपंचक	,,	×	×	६७
८८	अंतर्लापिका	,,	×	×	७०
८९	रामार्चा परिचर्या	काष्ठजिह्वादेव 'देव' (सं० १९०७ में वर्तमान)	×	×	५३
९०	काशिराज प्रकाशिका (कविप्रिया-टीका)	सरदार	×	×	४५

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	वि०पृ०
६१	सुखविलासिका (रसिकप्रिया-टीका)	सरदार	१६०३वि०	×	४५
६२	सतसैयां वरनार्थ	ठाकुर	१८६१वि०	१६१०वि०	२२
६३	माधवानल कामकंदला	आलम	६६१हि०	१८५६वि०	१५
६४	रसदीप	कवींद्र	१७६६वि०	×	२७
६५	चित्रावली	उसमान	१६७०वि०	१८०२वि०	३०
६६	जंजीरा	कालिदास त्रिवेदी	×	×	११
६७	कविप्रिया	केशवदास	१६५८वि०	×	८१
६८	विज्ञानगीता	"	"	१८५६वि०	८१
६६	रसिकप्रिया	"	१६४८वि०	१८७१वि०	८१
१००	रसराज	मतिराम	१७०७वि०	१८३६वि०	८१
१०१	भक्तवत्सल	मलूकदास	×	१८७६वि०	६१
१०२	प्रेमपयोनिधि	मृगेंद्र	१६१२वि०	१६१८वि०	४०
१०३	शकुंतला नाटक	नेवाज	१७३७वि०	१८५१वि०	८१
१०४	भक्तिरसबोधनी टीका (भक्तमाल टीका)	प्रियादास	१७६६वि०	१७५१वि०	८१
१०५	जगदीशशतक	राजा रघुराजसिंह	×	×	६२
१०६	रामरसिकावली	"	१६००वि०	×	६६
१०७	महाभारत भाषा	सबलसिंह चौहान	×	१८५२वि०	५१
१०८	सहजराम चंद्रिका	सहजराम नाज़िर	×	×	४८
१०६	अलंकारदीपक	शंभुनाथ मिश्र	×	१८५६वि०	२७
११०	षट्ऋतु	सेनापति	×	×	४२
१११	माधवविनोद नाटक	सोमनाथ	१८०६वि०	१६००वि०	४०
११२	विनोद काव्य सरोज	श्रीपति	×	×	४०
११३	अनन्तरचंद्रिका	शुभकरण कवि	×	१८५८वि०	२६
११४	रसरसार्णव	सुखदेव मिश्र	×	१८७१वि०	३२
११५	भागवत (सूरसागर)	सूरदास	१६३७वि०	१८५३वि०	८१

संवत् १६६२ (सन् १६०५ ई०)

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	वि०पृ०
११६	प्रेमदीपिका	अक्षर अनन्य	×	१६१०वि०	१

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि०पृ०
११७	राजोग (राजयोग)	अक्षर अनन्य	×	१९३५वि०	१
११८	कादंबरी	बलदेव	१८४१वि०	१८४१वि०	५५
११९	श्रीबिहारिनदासकी बानी	बिहारिनदास	×	×	५७
१२०	अष्टांगयोग	स्वामी चरणदास	×	१९४१वि०	१६
१२१	नासकेत	,,	×	१८८४वि०	१६
१२२	संदेहसागर	,,	×	१९५०वि०	१७
१२३	काव्यरसायन	देव	×	×	२४
१२४	प्रेमरत्न	फाजिलसाह	१९५०वि०	१९३७वि०	५२
१२५	अंगदर्पण वा शिखनख	गुलामनबी'रसलीन'	१७९४वि०	×	१४
१२६	रसप्रबोध	,,	१७९८वि०	१९०७वि०	१५
१२७	रसरंग	ग्वाल	१९०४ वि०	१९५४ वि०	११
१२८	अलंकार (रचयिता के हाथ की लिखी है)	,,	×	×	१२
१२९	हम्मीरहठ	,,	१८८१ वि०	१९४५ वि०	१२
१३०	भक्तभावन	,,	१९१९ वि०	१९५४ वि०	१३
१३१	रसचंद्रोदय	उदयनाथ कवींद्र	१८०४ वि०	१९३० वि०	२
१३२	नखसिख	कलानिधि	×	१८५१ वि०	३
१३३	भूषनदास	खंडन कवि	१७८७ वि०	१८८४ वि०	९०
१३४	नागरीदासजीकी बानी	नागरीदास (टट्टी संप्रदाय)	×	×	२८
१३५	स्वामी हरिदास जी को मंगल	,,	×	×	३६
१३६	अनूपगिरि हिम्मतबहादुर की विरुदावली	पद्माकर	×	×	३७
१३७	राजनीति	,,	×	×	३८
१३८	पद्माभरण	,,	×	१९५६ वि०	३९
१३९	रसरतन काव्य	पुहकर	१६७३ वि०	१८९२ वि०	४३
१४०	काव्यविलास	प्रतापसाहि	१८८६ वि०	×	४५

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि०पृ०
१४१	जुगल शिखनख	प्रतापसाहि	१८८६ वि०	१९०६ वि०	४६
१४२	रसनिधि के अरिल्ल और माँझ	रसनिधि	×	१८७४ वि०	७१
१४३	दोहरा	,,	×	१८७८ वि०	७१
१४४	रूपविलास	रूपसाहि	१८१३ वि०	१८५७ वि०	७८
१४५	अध्यात्मप्रकाश	सुखदेव मिश्र	×	१९४५ वि०	९०
१४६	कवित्तों का संग्रह	ठाकुर	×	×	९१
१४७	स्वा०हरिदासजी की बानी	स्वा०हरिदासजी	×	×	९४
१४८	विठलविपुलजी की बानी	स्वा० विठ्ठलविपुल (टट्टी संप्रदाय)	×	×	५६
१४९	हरिदौल चरित्र	बिहारीलाल	१८१५ वि०	१९१८ वि०	५९
१५०	रसभूषण	याकूबखान	×	१९१७ वि०	६९

सं० १९६३–६५ वि० (सन् १९०६–८ ई०)

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि०पृ०
१५१	उपवनविनोद	भोज	×	×	२४
१५२	राजविनोद	राजा छत्रसाल	×	×	२५
१५३	गीतों का संग्रह	,,	×	×	२५
१५४	विजयमुक्तावली	छत्रकवि(छत्रसिंह)	१७५७ वि०	१९९०वि०	२५
१५५	राजनीति के कवित्त	देवीदास	×	१९९०वि०	२७
१५६	दफ्तरनामा	गणेश	१८५२वि०	१९३१वि०	२८
१५७	छत्रप्रकाश	गोरेलाल पुरोहित	१८२९वि०	×	३१
१५८	सनेहसागर	हंसराज बख्शी	×	१८८२वि०	३१
१५९	जगतराजदिग्विजय	हरिकेश द्विज	×	१९५६वि०	३४
१६०	कामरूप की कथा	हरिसेवक	×	१७७५वि०	३४
१६१	दफ्तरनामा	हिम्मतसिंह	१७७४वि०	१९०४वि०	३४
१६२	वीरसिंहदेव चरित्र	केशवदास	१६६४वि०	×	३६
१६३	राजा मोहमर्दनकी कथा	खंडन कवि	१७८१वि०	१८६१वि०	३६
१६४	मृगावती की कथा	मेघराज प्रधान	१७२३वि०	१८०६वि०	४१
१६५	मकरध्वज की कथा	,,	×	१७८१वि०	४२

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि० पृ०
१६६	धनुषविद्या	नोने व्यास	१७६८ वि०	१८११ वि०	४६
१६७	जगद्विनोद	पद्माकर	×	१८८१ वि०	४७
१६८	कीर्तन	प्राणनाथ स्वामी (धामीपंथी)	×	१७६७ वि०	४६
१६६	प्रगटबानी	,,	×	×	४६
१७०	ब्रह्मबानी	,,	×	×	४६
१७१	राजविनोद	,,	×	×	४६
१७२	काव्यविलास	प्रतापसाहि	१८८६ वि०	१८६४ वि०	४६
१७३	व्यंग्यार्थ कौमुदी	,,	१८८२ वि०	×	५०
१७४	अलंकार दर्पण	रतन कवि	१८२७ वि०	१६०१ वि०	५५
१७५	बुंदेलवंशावली	शाह जू पंडित	×	१८८८ वि०	५६
१७६	धनुर्वेद	यशवंतसिंह	×	×	५८
१७७	ध्यानमंजरी	अग्रदास	×	१६५७ वि०	५६
१७८	कुंडलिया	,,	×	×	५६
१७६	गोविंदानंदघन	अलिरसिकगोविंद	१८५८ वि०	×	५६
१८०	अष्टदेश भाषा	,,	×	×	५६
१८१	आनंदघन के कवित्त	आनंदघन या घनानंद	×	×	६०
१८२	पीपा परिचय	अनंतदास	×	१७७६ वि०	६१
१८३	रैदास की कथा	,,	१६४५ वि०	×	६१
१८४	विचारमाल	अनाथदास	१८०३ वि०	१८६३ वि०	६१
१८५	भाषाभरण	बैरिसाल	×	१८६० वि०	६२
१८६	अमृतधारा	भगवानदासनिरंजनी	१७२२ वि०	१६०४ वि०	६३
१८७	गणितसार	भीम जू	१८७३ वि०	१६२६ वि०	६३
१६२	रसमुक्तावली	ध्रुवदास	×	×	६६
१८८	प्रबोध चंद्रोदय नाटक	ब्रजवासीदास	१८१७ वि०	×	६४
१८६	पिंगल	चिंतामणि	×	१८३६ वि०	६७
१६०	सारसंग्रह	दासासाह(दाराशिकोह ने संग्रह करवाया था)	×	×	६७
१६१	कबीर के द्वादशपंथ	धर्मदास	×	×	६८

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र० का०	लि० का०	रि० पृ०
१९३	रसविहार	ध्रुवदास	×	×	६९
१९४	बयालीस बानी	,,	×	१८२७ वि०	६९
१९५	मानविनोद	,,	×	×	६९
१९६	शृंगारसत	,,	×	×	६९
१९७	भजनसत	,,	×	१८५९ वि०	६९
१९८	कविकुल कंठाभरण	दूल्हा कवि	×	×	७०
१९९	सभाप्रकाश	द्विज कवि	१८३६ वि०	१८९९ वि०	७०
२००	कुंडलिया	गिरिधर कविराय	×	१९१६ वि०	७०
२०१	हरिवंश चौरासी	हितहरिवंश जी	×	१८२९ वि०	७२
२०२	वधूविनोद	कालिदास त्रिवेदी	×	१८६७ वि०	७४
२०३	रघुवरकरकर्णाभरण	किशोरीशरण	×	१९३० वि०	७५
२०४	युक्तितरंगिणी	कुलपति मिश्र	१७४३ वि०	×	७६
२०५	नखशिख	,,	×	१९१५ वि०	७६
२०६	हरिचरित्र	लालचदास	१५९५ वि०	१८९८ वि०	७७
२०७	अवधविलास	लालदास	१७३२ वि०	×	७७
२०८	प्रेमसागर	लल्लू जी लाल	१८६७ वि०	१९०४ वि०	७७
२०९	दानमाधुरी	माधुरीदास	×	×	७७
२१०	साहित्यसार	मतिराम	×	१८९४ वि०	७८
२११	लक्षण शृंगार	,,	×	१८८४ वि०	७८
२१२	धनघन	नागरीदास (राजा सावंतसिंह)	×	×	७९
२१३	भक्तिसार	,,	१७९९ वि०	×	७९
२१४	पदप्रसंगमाला	,,	×	×	७९
२१५	अष्टांगयोग	नानक जी	×	×	७९
२१६	पंचाध्यायी	नंददास	×	१८७२ वि०	७९
२१७	भागवत	,,	×	×	७९
२१८	श्यामसगाई	,,	×	×	७९
२१९	सुदामाचरित्र	नरोत्तमदास	×	१८८७ वि०	८०

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र० का०	लि० का०	रि० पृ०
२२०	ध्रुव चरित्र	परमानंददास (अष्टछाप)	१६८९ वि०	१७६९ वि०	८०
२२१	शृंगारमंजरी	राजा प्रतापसिंह	१८५२ वि०	×	८१
२२२	नीतिमंजरी	”	”	×	८१
२२३	वैराग्यमंजरी	”	”	×	८१
२२४	रसनिवास	राजा रामसिंह	१८३९ वि०	१९२० वि०	८४
२२५	रसविनोद	”	१८६० वि०	×	८४
२२६	प्रेमरत्नाकर	देवीदास	×	१८०१ वि०	८५
२२७	वृंदावन माधुरी	रूपरसिक	×	×	८५
२२८	शृंगार सुख	रूप सनातन	×	×	८५
२२९	महाभारत (भीष्म, कर्ण पर्व)	सबलसिंह चौहान	१७१० वि०	१९३७ वि०	८६
२३०	सुरसमंजावली	सहचरिशरण (टट्टी संप्रदाय)	×	१९०४ वि०	८६
२३१	सहजप्रकाश	सहजोबाई	१८०० वि०	१८७६ वि०	८६
२३२	बानी	सरसदास (टट्टी संप्रदाय)	×	×	८६
२३३	जयचंद वंशावली (एक ताम्रपत्र के आधार पर जो कमौली में पाया गया)	सतीप्रसाद	×	×	८७
२३४	कवित्त	सेनापति	×	×	८७
२३५	बानी	सेवकहित	×	१८९८ वि०	८७
२३६	अलंकारदीपक	शंभूनाथ मिश्र	×	१९५८ वि०	८७
२३७	उर्वशी	शिरोमणि मिश्र (शाहजहाँ का आश्रित)	×	१९३६ वि०	८८
२३८	बागविलास	शिव कवि (दौलतराव सिंधिया का आश्रित)	×	×	८८
२३९	जुगलसत	श्री भट्ट	×	१९२८ वि०	८८

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	वि०पृ०
२४०	सुवरनवेलि की कविता	सोनकुँवरि महारानी	×	१८३४ वि०	८८
२४१	वृत्तविचार	सुखदेव मिश्र	१७२८ वि०	१८८८ वि०	८६
२४२	ज्ञानसमुद्र और सवैया	सुंदरदास जी (दादूपंथी)	×	१८७० वि०	६०
२४३	रसगाहक चंद्रिका	सूरत मिश्र	१७६१ वि०	१८६६ वि०	६०
२४४	रसरत्नमाला	"	१७६८ वि०	×	६०
२४५	अमरचंद्रिका	"	१७६४ वि०	१७६७ वि०	६०
२४६	रसिकप्रिया टीका	"	१८०० वि०	१८८७ वि०	६०
२४७	काव्यसिद्धांत	"	×	×	६०
२४८	सूरसागर	सूरदास	×	१७६२ वि०	६१
२४९	बरवा रामायण	गो० तुलसीदास	×	१६४७ वि०	६१
२५०	हनुमान बाहुक	"	×	१६४७ वि०	६१
२५१	तुलसी सतसई	"	×	१६०१ वि०	६१
२५२	रामाज्ञा	"	×	×	६१
२५३	वैराग्य संदीपनी	"	×	१८८६ वि०	६१
२५४	जानकीमंगल	"	×	१८७४ वि०	६२
२५५	विनयपत्रिका	"	×	१८८४ वि०	६२
२५६	छप्पय रामायण	"	×	१६२८ वि०	६२
२५७	महाभारत कथा	विष्णुदास	१४६२ वि०	१८२४ वि०	६२
२५८	महाभारत (स्वर्गारोहण पर्व)	विष्णुदास	×	१८३२ वि०	६२
२५९	उत्तम नीति चंद्रिका	महाराज विश्वनाथ सिंह (रीवाँ)	×	१६०४ वि०	६३
२६०	आनंदरघुनंदन नाटक	"	×	×	६३
२६१	पाखंडखंडिनी	"	×	×	६३
२६२	जमुनाप्रताप वेलि	वृंदावनदास	१८१७ वि०	१८३७ वि०	६३
२६३	माखनचोर लहरी	"	×	×	६३
२६४	सुदामाचरित्र	गोपाल कवि	१८५३ वि०	१६३१ वि०	६४
२६५	कविवल्लभ	हरिचरणदास	१८३५ वि०	१६०० वि०	६४

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि०पृ०
२६६	सभाप्रकाश	हरिचरणदास	१८४१ वि०	१८६३ वि०	६४
२६७	छंदरत्नावली	हरिराम	×	×	६५
२६८	गोविंदचंद्रिका	इच्छाराम	१८४७ वि०	१९३१ वि०	६६
२६९	विचारमाल	अनाथदास या जन अनाथ	१७२६ वि०	१८८० वि०	६६
२७०	भँवरगीत	जनमुकुंद	×	×	६८
२७१	योगवाशिष्टसार	कवींद्राचार्य	×	१८३६ वि०	६८
२७२	हिततरंगिणी	कृपाराम	१५९८ वि०	१९६० वि०	९९
२७३	करुणाभरण नाटक	लच्छीराम	×	१९३३ वि०	९९
२७४	रघुनाथरूपक	मञ्छ कवि	×	×	१०१
२७५	ज्ञानमंजरी	मनोहरदास निरंजनी	१७१६ वि०	१८४० वि०	१०२
२७६	वेदांत परिभाषा	मनोहरदास निरंजनी	१७१७ वि०	१८४० वि०	१०२
२७७	बारहमासा	मुहम्मदशाह	×	×	१०२
२७८	रसरतन	पुहकर	१६७३ वि०	×	३१५
२७९	दृष्टांत बोधिका	रामचरण	×	×	३१५
२८०	रसभूषण	याकूब खाँ	×	१८३७ वि०	१११

संवत् १९६६–६८ (१९०९–११ ई०)

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि०पृ०
२८१	सुखमनी	नानक	×	×	७
२८२	सूरसारावली	सूरदास	×	×	७
२८३	साहित्य लहरी	सूरदास	×	×	७
२८४	शृंगार रस मंडन	गो० विट्ठलनाथ	×	×	९
२८५	व्यास जी की बानी	व्यास जी	×	×	९
२८६	राजा हरिश्चंद्रकी कथा	जगन्नाथ मिश्र	×	×	१०
२८७	फुटकर बानी	हितहरिवंश जी	×	×	१०
२८८	नासकेतपुराण	नंददास	×	१८१३ वि०	११
२८९	बरवै नायिकाभेद	रहीम	×	×	१२
२९०	चंद छंद बरनन की महिमा	गंग कवि	×	१६३६ वि०	१२

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि०पृ०
२९१	राधारासा	दयालदास भाट	१६७७ वि०	×	१३
२९२	सुधानिधि	तोषमणि	१६९१ वि०	×	१४
२९३	पत्नीविलास	घासीराम	×	×	१५
२९४	मतिराम सतसई	मतिराम	×	×	१६
२९५	जातिविलास	देव	×	×	१६
२९६	भावविलास	"	१७४६ वि०	×	१६
२९७	सुखसागर तरंग	"	×	×	१६
२९८	शब्द रसायन	"	×	×	१६
२९९	फाजिलअली प्रकाश	सुखदेव मिश्र	१७३३ वि०	×	१६
३००	छंदविचार	"	×	×	१६
३०१	शिखनख	"	×	×	१६
३०२	संग्रामसार	कुलपति मिश्र	१७३३ वि०	×	१६
३०३	काव्यसरोज	श्रीपति	१७७७ वि०	×	१८
३०४	शृंगारदर्पण	आजमखान	×	×	१८
३०५	रसपीयूष निधि	सोमनाथ	१७९४ वि०	×	१९
३०६	श्री आचार्यमहाप्रभून की द्वादस निज वार्ता	हरिराय जी	×	×	१९
३०७	चौरासी वैष्णवन की वार्ता	"	×	×	१९
३०८	निज वार्ता और घरू वार्ता	"	×	×	१९
३०९	दस्तूरमालिका	वंशीधर	×	×	१९
३१०	गुलजार चमन	शीतल	×	×	१९
३११	दलेलप्रकाश	थान कवि	१८४८ वि०	×	२०
३१२	टिकैतराय प्रकाश	बेनी कवि	१८४९ वि०	×	२०
३१३	नवरसतरंग	बेनी प्रवीन	१८७८ वि०	×	२०
३१४	चकत्ता की पातस्याही की परंपरा	×	×	×	२०

संवत् १९६९–७१ (सन् १९१२–१४ ई०)

३१५	कवित्त	गंग	×	×	५

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि०पृ०
३१६	कवित्तरत्नाकर	सेनापति	×	×	६
३१७	दुर्गाभक्ति चंद्रिका	कुलपति मिश्र	१७४६ वि०	१८५१ वि०	६
३१८	सुजानचरित्र	सूदन कवि	×	१६२७ वि०	७

संवत् १६७४–७६ (सन् १६१७–१६ ई०)

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि०पृ०
३१६	दक्षणविलास	अहमदुल्ला	१७७६ वि०	×	१०
३२०	बलदेवविलास	दयाकृष्ण	१८६८ वि०	×	१३

संवत् १६७७–७६ (१६२०–२२ ई०)

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि०पृ०
३२१	कुलजमस्वरूप	प्राणनाथ	×	१८४० वि०	२७
३२२	मदनाष्टक	रहीम	×	×	२६
३२३	कीर्तिलता	विद्यापति	×	×	३०
३२४	जगद्विनोद	पद्माकर	×	×	६०

संवत् १६८०–८२ (सन् १६२३–२५ ई०)

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि०पृ०
३२५	माधवानल कामकंदला	आलम	१६४० वि०	×	१६
३२६	कवित्त	आलम और शेख	×	×	१६
३२७	जन्म साखी	गुरु अंगद जी	×	×	२०
३२८	सुजानविनोद	आनंदघन (घनानंद)	×	×	२१
३२६	भाषाभूषण(भाषाभरण)	बैरिसाल	१८२५ वि०	×	२५
३३०	नखशिख	बलभद्र	×	×	२५
३३१	बनारसी विलास	बनारसीदास जैन	×	×	२८
३३२	नाटक समयसार	„	×	×	२८
३३३	अर्द्धकथानक	„	×	×	२८
३३४	रसरत्नाकर	मौन	१८६१ वि०	×	३३
३३५	छंदार्णव पिंगल	भिखारीदास	×	×	३४
३३६	रससारांश	भिखारीदास	×	×	३४
३३७	शृंगारनिर्णय	भिखारीदास	×	×	३४
३३८	काव्यनिर्णय	भिखारीदास	×	×	३४
३३६	भूपति सतसई	राजा गुरुदत्तसिंह 'भूपति'	×	×	३७

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि०पृ०
३४०	शिवराजभूषण	भूषण	१७३० वि०	×	३७
३४१	बिहारी सतसई	बिहारीलाल	×	×	३७
३४२	व्रजविलास	व्रजवासीदास	१८२८ वि०	१८८७ वि०	४०
३४३	काव्याभरण	चंदन कवि	१८४५ वि०	×	४१
३४४	शब्द	स्वा० चरणदास	×	×	४१
३४५	कविकुल कल्पतरु	चिंतामणि	×	×	४३
३४६	दादूदयाल की बानी	दादूदयाल	×	×	४३
३४७	आदिपुराण की बालबोध भाषा वचनिका	दौलतराम जैन	१८२३ वि०	×	४५
३४८	प्रेमरत्नाकर	देवीदास	१७४२ वि०	×	४८
३४९	कायपाखी	धरमदास	×	१८७४ वि०	४९
३५०	अन्योक्तिमाला	दीनदयाल गिरि	१८७९ वि०	×	४९
३५१	दृष्टांत तरंगिनी	दीनदयाल गिरि	×	×	४९
३५२	अनुराग बाग	दीनदयाल गिरि	×	×	४९
३५३	कुंडलिया	गिरधर	×	×	५५
३५४	रसप्रबोध	गुलाम नबी 'रसलीन'	१७९८ वि०	×	५८
३५५	नैषध ग्रंथ	गुमान मिश्र	१८२० वि०	×	५९
३५६	हरिदास जी की बानी	स्वा० हरिदास	×	×	६२
३५७	महाबानी	हरिव्यासदेव जी	×	×	६४
३५८	हित चौरासी	हितहरिवंश जी	×	×	६६
३५९	हनुमान नाटक	हृदयराम	×	×	६६
३६०	भरतमिलाप	ईश्वरदास	×	×	६९
३६१	शब्दसागर	स्वा० जगजीवनदास	×	×	६९
३६२	जंजीरा	कालिदास	×	×	५९
३६३	वधूविनोद	कालिदास	×	×	५९
३६४	रामचंद्रिका	केशवदास	१६५८ वि०	×	८०
३६५	कविप्रिया	केशवदास	×	×	८०
३६६	विज्ञान गीता	केशवदास	×	×	८०

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	रि०पृ०
३६७	रसिकप्रिया	केशवदास	×	×	८०
३६८	बिहारी सतसई टीका	कृष्ण कवि	×	×	८४
३६९	रसरहस्य	कुलपति मिश्र	१७२७ वि०	×	८५
३७०	लालचरित्र	लाल कवि	१८७५ वि०	×	८६
३७१	रसरत्नावली	मंडन	१७१६ वि०	×	९४
३७२	रसराज	मतिराम	१७८०, वि०	×	९६
३७३	ललितललाम	मतिराम	×	×	९६
३७४	नायिकाभेद संग्रह	मतिराम	×	×	९६
३७५	भक्तमाल	नाभादास	×	×	१००
३७६	सुखमनि	गुरु नानक जी	×	×	१०१
३७७	साखी ज्ञानकांड	गुरु नानक जी	×	×	१०१
३७८	ज्ञानस्वरोदय	गुरु नानक जी	×	×	१०१
३७९	संत सुमरिनी	गुरु नानक जी	×	×	१०१
३८०	सत नाम	गुरु नानक जी	×	×	१०१
३८१	नाममाला	नंददास	×	×	१०३
३८२	अनेकार्थ मंजरी	नंददास	×	×	१०३
३८३	शकुंतला नाटक	निवाज	×	×	१०६
३८४	दानलीला	परमानंददास (अष्टछाप)	×	×	१०७
३८५	श्रीपालचरित्र	परिमल्ल	१६४९ वि०	×	१०७
३८६	भ्रमरगीत	प्रागिन	×	×	१०७
३८७	भक्तिरसबोधनी टीका	प्रियादास	१७६९ वि०	×	११०
३८८	सवैया	रसखान	×	×	११८
३८९	फतेहप्रकाश	रतन कवि	×	×	१२०
३९०	भगवंतराय रासा	सदानंद	×	×	१२२
३९१	सृष्टि पुराण	सेवादास	×	१७९४ वि०	१२६
३९२	निरंजन पुराण	सेवादास	×	१७९४ वि०	१२६
३९३	वाग्विलास	सेवकराम	×	१९२१ वि०	१२७
३९४	रसपीयूषनिधि	सोमनाथ	१७९४ वि०	×	१३२

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०	वि०पृ०
३९५	युगलसत	श्री भट्ट जी	१६५२वि०(१३५२ ?)		१३२
३९६	अनवरचंद्रिका	शुभकरण कवि	१७७१ वि०	×	१३४
३९७	रामजन्म	सूरदास	×	×	१३७
३९८	कूट कवित्त	ठाकुर	×	१८४२ वि०	१३९
३९९	रसचंद्रोदय	उदयनाथ	१८०४ वि०	×	१४२
४००	वृंद सतसई	वृंद कवि	१७६१ वि०	×	१४५

संवत् १९८३-८५ (सन् १९२६-२८); अप्रकाशित

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०
४०१	मूल गोसाईंचरित	बाबा वेणिमाधवदास	×	×
४०२	रामायण रामविलास	ईश्वरी त्रिपाठी	१९१६ वि०	×
४०३	आनंदरस	रामप्रसाद	×	×
४०४	तिलशतक	जुगतराय	×	×
४०५	पदार्थतत्वदीपक (ज्योतिष, रसायन, रजकविद्या, उद्यान-शास्त्र, शृंगारविद्या, पाकविद्या, भूमिति, पर्याय शब्द, धर्म और वेद आदि विषय)	ठाकुर लेखराज	×	×

संवत् १९८६-८८ (सन् १९२९-३१ ई०); अप्रकाशित

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०
४०६	महापद	जवाहरदास	१८८८ वि०	१८८९ वि०
४०७	जैमिनिपुराण	रतिभान	१६८८ वि०	×
४०८	योगवाशिष्ठ	रामप्रसाद निरंजनी	१७९८ वि०	१८७५ वि०
४०९	मृगयाविहार	हरीराम	१९१५ वि०	१९१५ वि०
४१०	सुधासार (दशमस्कंध भागवत का अनुवाद)	छत्र कवि	१७७६ वि०	×
४११	कन्हैयाजन्म, वंशी, बंजारा-नामा तथा हंसनामा	नजीर	×	×
४१२	प्रह्लादलीला	रैदास	×	×
४१३	रैदास के पद	,,	×	१९९६ वि०

संवत् १९८९–९१ (सन् १९३२–३४ ई०); अप्रकाशित

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०
४१४	कविता रस विनोद	जनराज वैश्य	१८३३ वि०	१९०६ वि०
४१५	विपिनविहार (उद्यान विषय)	जनखुस्याल	१८६२ वि०	×
४१६	हस्तामलक वेदांत	अखैराम	×	×
४१७	विक्रमबत्तीसी	अखैराम	१८१२ वि०	×
४१८	जोगलीला (कृष्ण-लीला)	उदराम कवि "उदय"	×	×
४१९	कवित्त	गंग	×	×
४२०	वनयात्रा, पुष्टिमार्ग के वचनामृत	गो० गोकुलनाथ	×	१९०५ वि०
४२१	पद्मिनिचरित्र (प्रेम-कथा)	लब्धोदय या लालचंद	१७०२ वि०	१७५७ वि०

संवत् १९९२–९४ (सन् १९३५–३७ ई०); अप्रकाशित

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०
४२२	हरिभक्ति प्रकाश	गंगाराम पुरोहित 'गंग'	१७९९ वि०	१८४७ वि०
४२३	वनयात्रा	जीमन महाराज की माँ	×	×
४२४	सुधासागर या सुधारस (२५७ कवियों की रचनाओं से संकलित)	नवीन कवि	१८९५ वि०	१९१० वि०
४२५	पद (भक्ति)	गंगा बाई	×	१७९३ वि०
४२६	रघुनाथ नाटक	दास (भिखारीदास ?)	×	×
४२७	परशुरामसागर या रामसागर (कृष्णभक्ति काव्य)	परशुराम	×	×
४२८	शून्यविलास (दर्शन)	बाबा हजारीदास	×	१९८८ वि०

संवत् १९९५–९७ (सन् १९३८–४०); अप्रकाशित

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०
४२९	सनेहतरंग (रीति)	बुद्धसिंह रावराजा	१७८४ वि०	१८९४ वि०
४३०	चंद्र चौरासी (माध्व संप्रदाय के सिद्धांत)	गो० चंद्रगोपाल जी	×	×
४३१	रसमंजरी (रीति)	हरिवंश टंडन	×	१७०९ वि०
४३२	कविसर्वस्व (साहित्यशास्त्र)	जयगोविंद वाजपेयी	×	१७६५ वि०

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०
४३३	काव्यरस (रस, अलंकार)	राजा जयसिंह	×	१८०२ वि०
४३४	सुदामाचरित्र	कलीराम	१७३१ वि०	१७३१ वि०
४३५	योगाभ्यास मुद्रा (प्राचीन खड़ीबोली गद्य)	कुमुटीपाव (? कुमुरीपाव)	×	१८६७ वि०
४३६	तीरंदाजी रिसाला (खड़ीबोली गद्य)	ख्वाजा महम्मद फाजिल	×	१८६६ वि०
४३७	भक्तमाल (निर्गुणी भक्तों का)	राघवदास या राघोदास	१७७१ वि०	१९३३ वि०
४३८	प्रेमरससागर	अखैराम	×	१८६६ वि०
४३९	कृष्णचंद्रिका (कृष्ण-चरित्र)	"	१८११ वि०	×
४४०	बिना नाम का ग्रंथ (इसमें 'विवरण वचनिका' अंश गद्य में है)	बनारसीदास जैन	१६७० वि०	×
४४१	इकतालीसशिक्षापत्र (ब्रजभाषा गद्य)	गोपेश्वर जी	×	१८८९ वि०
४४२	कृपाकल्पतरु (कृष्णचरित्र)	रूपरसिक	×	×
४४३	श्री कबीरदास जी के पदों की टीका	×	×	१८५५ वि०

संवत् १९९८–२००० (सन् १९४१–४३); अप्रकाशित

४४४	शब्दी	गोरखनाथ	×	१८५५ वि०
४४५	शब्दी	भरथरी	×	"
४४६	शब्दी	चिरपट	×	"
४४७	शब्दी	गोपीचंद	×	"
४४८	शब्दी	जलंधरीपाव	×	"
४४९	शब्दी	पृथ्वीनाथ	×	"
४५०	शब्दी	चौरंगीनाथ	×	"
४५१	शब्दी	कणेरीपाव	×	"
४५२	शब्दी	हालीपाव	×	"
४५३	शब्दी	मीडकीपाव	×	"

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०
४५४	शब्दी	हणवंत	×	,,
४५५	शब्दी	नागा अरजन	×	,,
४५६	शब्दी	सिद्ध हरताली	×	,,
४५७	शब्दी	सिद्ध गरीब	×	,,
४५८	शब्दी	धूंघलीमल	×	,,
४५६	शब्दी	रामचंद्र	×	,,
४६०	शब्दी	बालगुदाई	×	,,
४६१	शब्दी	घोड़ाचोली	×	,,
४६२	शब्दी	अजैपाल	×	,,
४६३	शब्दी	चौणकनाथ	×	,,
४६४	शब्दी	देवलनाथ	×	,,
४६५	शब्दी	महादेव	×	,,
४६६	शब्दी	पारबती	×	,,
४६७	शब्दी	सिद्ध मालीपात्र	×	,,
४६८	शब्दी	सुकुलहंस	×	,,
४६६	शब्दी	दत्तात्रय	×	,,
४७०	शब्द और वाणियाँ (निर्गुणी)	बावरी साहिबा	×	१८६७ वि०
४७१	शब्द और वाणियाँ ,,	बीरू साहब	×	१८६७ वि०
४७२	शब्द और वाणियाँ ,,	यारी साहब	×	१८६७ वि०
४७३	शब्द और वाणियाँ ,,	बुला साहब	×	१८६७ वि०
४७४	शब्दावली	विरंच गोसाईं	×	×
४७५	पुहुपावती (प्रेमाख्यानक काव्य)	दुखहरण	१७२६ वि०	१८६७ वि०
४७६	छिताई चरित (प्रेमाख्यानक काव्य)	रतनरंग	×	१६८२ वि०
४७७	विक्रमविलास या नवरस	नेवजीलाल दीक्षित	×	१८७२ वि०
४७८	महराई गोसाईं धरनीदास (अध्यात्म विषय)	धरनीदास	×	×
४७६	बागविलास (उद्यान वर्णन)	सेवकराम	×	×
४८०	कामरूप का किस्सा (प्रेमकाव्य)	×	×	×

संवत् २००१–२००३ (सन् १९४४–४६); अप्रकाशित

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०
४८१	सत्यवती की कथा [सिकंदर लोदी (१४५६–७४) के समय की रचना]	ईश्वरदास (ईसरदास)	×	×
४८२	भरतमिलाप और अंगद पैज	ईश्वरदास (ईसरदास)	×	×
४८३	श्लेषार्थ विंशति	कन्हैयालाल भट्ट (कान्ह)	×	×
४८४	रामायण	कुदरती साहब	×	×
४८५	जैमिनि कथा (इसमें मध्यकाल का कुछ इतिहास भी है)	कृष्णदास	१६२८ वि०	१८९७ वि०
४८६	मैनसत के उत्तर (प्रेमकथा)	गंगाराम	×	१८३२ वि०
४८७	भाषा संग्रह (इसमें अनेक कवियों के १२०० छंद संगृहीत हैं)	चतुर्भुज मिश्र	१७०२ वि०	×
४८८	रत्नावती, कनकावती आदि (प्रेमाख्यानक रचनाएँ)	जान (जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब के समय में वर्तमान)	१७वीं शती	×
४८९	प्रेमलीला (प्रेममार्गी रचना)	मिरजा मुहम्मदजान	×	१९०६ वि०
४९०	ज्योतिष और गोलाध्याय (खड़ीबोली गद्य)	तामसन साहब	×	१८७९ वि० (मुद्रणकाल)
४९१	गीता भाषा	थेघनाथ	१५५७ वि०	१७२७ वि०
४९२	वाराणसी विलास	पंचौली देवकर्ण	१८०७ वि०	१८०८ वि०
४९३	जेहली जवाहिर (हास्यरस की कथा; प्रसिद्ध कवि सोमनाथ के हाथ की लिखी प्रति)	प्राणनाथ सोती	×	१७९० वि०
४९४	पंचायत का न्यायपत्र (पूर्वी अवधी गद्य)	फणींद्र मिश्र	१७०१ वि०	१७०१ वि०
४९५	नलोपाख्यान (काव्य)	भरसी मिश्र-रामनाथ पं०	×	×

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०
४९६	सतकविकुलदीपिका (साहित्य तथा अन्य विषय)	भारथसिंह या भारथसाहि	×	१८९७ वि०
४९७	हरिलीला सोलहकला (डिंगल)	भीम	१५४१ वि०	१७२६ वि०
४९८	कविकुल तिलक प्रकाश	महीपति या महीप	१७४६ वि०	×
४९९	दिग्विजै चंपू (इसमें बलरामपुर के राजाओं का इतिहास भी है)	शिवदास गदाधर	१९१० वि०	×
५००	वियोगसागर और मोहनी(शृंगार)	शेख अहमद	×	१७७८ वि०
५०१	यूसुफ जुलेखा(प्रेमाख्यानककाव्य)	शेखनिसार	१८४७ वि०	१९५६ वि०
५०२	लक्ष्मणशतक (काव्य)	समाधान	×	×
५०३	दस्तूर शिकार का	हसन अली खाँ	×	१८१६ वि०
५०४	गोराबादल पद्मिनी चौपाई	हेमरतन	१६४५ वि०	×
५०५	रसधमार	अलीमुहिब्बखाँ 'प्रीतम'	१७९७ वि०	१८०० वि०
५०६	नहुष नाटक	गिरिधरदास (भारतेंदु के पिता)	×	१९२३ वि०
५०७	प्रेमविलास प्रेमलता कथा	जटमल नाहर	१६९३ वि०	१९९९ वि०
५०८	सोमवंश की वंशावली	देवीदास	×	१८३१ वि०
५०९	डंगवे पुराण	भीम	१५५० वि०	१७७७ वि०
५१०	हरिचरित्र विराट पर्व (इसमें जैदेव, घघ, विद्यापति, बैजलदास आदि कवियों का उल्लेख तथा कवि के समय की देश-स्थिति का भी वर्णन है)	लखनसेनि	१४८१ वि०	१८८७ वि०
५११	यमकालंकार सतसैया	वृंद कवि	१७६३ वि०	×
५१२	शृंगार विलास (कवि के हाथ की लिखी प्रति)	सोमनाथ	×	×

संवत् २००४–२००६ (सन् १९४७–४९); अप्रकाशित

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०
५१३	अलंकार मंजरी	ऋषिनाथ	१८३० वि०	१८९० वि०
५१४	रसरंग (रस-वर्णन)	कान्ह कवि	१८०२ वि०	१८९८ वि०

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०
५१५	सखीसमाज नाटक (राधाकृष्ण क्रीड़ा)	कीर्तिकेशव या केशव-कीर्ति	×	१७६० वि०
५१६	महाभारत (शल्य और गदापर्व)	'गंग'(१६६४ में वर्तमान)	×	१८८६ वि०
५१७	२५२ कीर्तन के पद (कृष्ण-भक्ति)	गोविंद स्वामी (अष्टछाप)	×	×
५१८	पिंगल	चतुर्भुज (अकबर के आश्रित)	×	×
५१९	प्रसंग पारिजात (स्वामी रामानंद का जीवनवृत्त)	चेतनदास	१५१७ वि०	१९९७ वि०
५२०	अघविनास	स्वामी जगजीवनदास	१७८० वि०	१८४९ वि०
५२१	शब्दप्रकाश और साखी	जवाहिरपति	×	×
५२२	रागमाला	तारानाथ [जयपुर-नरेश रामसिंह (१७२३—३२) के आश्रित]	×	×
५२३	नवधाभक्ति विधान	तुरसी	×	×
५२४	जानकीमंगल	गो० तुलसीदास	१६३२ वि०	×
५२५	दोहासार संग्रह (दारा शिकोह ने संग्रह कराया)	दिनमनि या श्रीमनि पं०	१७१० वि०	×
५२६	उत्तरपुराण (जैन पुराण)	देवदत्त कवि (जैन)	१८४० वि०	१८६७ वि०
५२७	करीमा और मामकीमा (भक्ति)	देवीदास कायस्थ	×	१९०६ वि०
५२८	सुखसनाथ (ज्ञानोपदेश)	बाबा देवीदास	१८४७ वि०	×
५२९	सुदामाचरित्र (काव्य)	धिरजाराम	१७८७ वि०	×
५३०	सुदर्शनचरित्र (जैन कथा)	नंद या नंदलाल	१६६३ वि०	×
५३१	यशोधरचरित्र (जैन कथा)	नंद या नंदलाल	१६७० वि०	×
५३२	नायिकाभेद (?)	नीलकंठ	×	×
५३३	ओखाहरण (ऊषाहरण काव्य)	परमानंद (परमाणंद)	१५१२ वि०	१९१३ वि०
५३४	श्रीपालचरित्र (जैन पुराण)	परिमल्ल	१६५१ वि०	१८०७ वि०
५३५	रघुराजविनोद (विविध विषय)	पुरंदर कवि	१९१९ वि०	१९५६ वि०

सं०	ग्रंथ	रचयिता	र०का०	लि०का०
५३६	सारसंग्रह (१५१ कवियों के छंद हैं)	प्रवीन कवि	१६६० वि०(?)	१६४५ वि०
५३७	बद्रीयात्रा कथा	बख्तावरसिंह (अयोध्या नरेश) की स्त्री	१८८८ वि०	×
५३८	सुदामाचरित्र (काव्य)	वनमाली	१८५८ वि०	×
५३९	सर्वार्थ पुराण (ऐतिहासिक)	बालदास बाबा	१८४४ वि०	×
५४०	सृष्टिसागर (सृष्टितत्त्व वर्णन)	भीखमदास बाबा	×	१८९२ वि०
५४१	द्वारिका विलास (काव्य)	रामनारायण	१८८० वि०	१८९२ वि०
५४२	कविकुलकुमुद कलाधर (पिंगल)	शिवनरेशसिंह	१९३१ वि०	१९४९ वि०
५४३	रससागर (रीति)	शिवराज महापात्र	१८६६ वि०	×
५४४	कविता कल्पतरु (साहित्यशास्त्र)	सागर कवि	१७८८ वि०	१७८९ वि०
५४५	रसरत्न ,,	साचार	×	×
३४६	सुदृष्टतरंगिनी (खड़ीबोली गद्य)	सीतल जैन	१८३८ वि०	१९७० वि०
५४७	परिचयी बाबा मलूकदास	सुथरादास	×	१७८४ वि०
५४८	शून्यविलास (दर्शन)	हजारीदास (संतदास)	×	१९८८ वि०
५४९	भावटीका (भक्ति)	हरिराय जी	१७५० वि०(?)	१८७० वि०